ओ३म्

गुरुकुल दर्शन

वैदिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का संवाहक

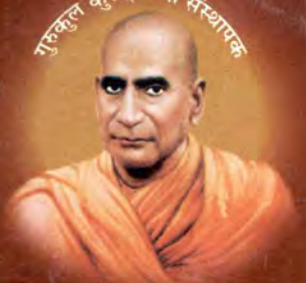

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का मुख पत्र

भाद्रपद वि. स. 2075 • कलियुगाब्द 5119 • वर्ष : 05 • अंक : 07 • अगस्त 2018

स्वामित्व :
गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा)-136 119
(केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् नई दिल्ली से 10+2 तक सम्बद्ध)
दूरभाष: 01744-238048, 238648
E-mail : kurukshetragurukul@gmail.com Website : www.gurukulkurukshetra.com
AN ISO 2008 CERTIFIED INSTITUTE

गुरुकुल परिवार की ओर से सभी देशवासियों को
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाऐं

कुलवन्त सिंह सैनी
प्रधान, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

ओ३म्

गुरुकुल कुरुक्षेत्र

NatureCare

द्वारा संचालित

स्वामी श्रद्धानन्द योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय

नज़दीक थर्ड गेट, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

मोटापा, मधुमेह, अर्थराइटिस, उच्च रक्तचाप (BP), कमर दर्द, सरवाइकल की समस्या, थायराइड, चर्मरोग, घुटना दर्द, जोड़ों का दर्द, नेत्र रोग, अस्थमा, पाइल्स (बवासीर), गुर्दे की पथरी, कब्ज, अल्सर, लकवा, तनाव, अनिद्रा, स्त्री एवं पुरुषों के रोग आदि का उपचार योग, प्राकृतिक चिकित्सा एवं पंचकर्म चिकित्सा द्वारा किया जाता है।

सुविधाएँ :

- ए.सी. व कूलर युक्त कमरों की सुविधा
- पुरुष एवं महिला चिकित्सकों की देख-रेख में चिकित्सा
- ऑर्गेनिक जूस सैन्टर
- फिजियोथेरैपी की विशेष सुविधा
- 40 एकड़ ग्रीन कैम्पस
- ग्रीन वॉकिंग ट्रैक
- 24 घंटे डॉक्टर्स उपलब्ध

वजन कम करने के लिए विशेष पैकेज का लाभ उठाएं

समय :

प्रातः 8.00 से 12.00 बजे
सायं 3.00 से 6.00 बजे

सम्पर्क सूत्र : 99960-26313, 314, 315

ओ३म्

गुरुकुल दर्शन

'सम्पादक परिवार'

संरक्षक : आचार्य देवव्रत (महामहिम राज्यपाल, हि. प्र.)
मुख्य संपादक : कुलवंत सिंह सैनी
मार्गदर्शक : विश्वबंधु आर्य
प्रबंध-संपादक : शमशेर सिंह
सह-संपादक : आचार्य सत्यप्रकाश
सूबेप्रताप आर्य
सुखविन्द्रपाल आर्य
नंदकिशोर आर्य
कानूनी सलाहकार : राजेन्द्र सिंह 'कलेर'
वित्तीय सलाहकार : सतपाल सिंह
पत्रिका व्यवस्थापक: राजीव कुमार आर्य
वितरण व्यवस्थापक: समरपाल आर्य
: अशोक कुमार

गुरुकुल भूमिदाता
सेठ ज्योति प्रसाद जी

आवश्यक सूचनाएं

1. **'गुरुकुल दर्शन'** मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखकों के हैं, संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्याय-क्षेत्र कुरुक्षेत्र होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के अन्दर ही मानी जाएगी।
2. पत्रिका के विलम्ब अथवा अनियमित रूप से मिलने की स्थिति में चलभाष 8689002402 पर सूचना देवें। पत्रिका के सम्बन्ध में आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव की हमें अपेक्षा रहेगी।

- संपादक

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृ.सं.
1.	सम्पादकीय : ध्यान से पाएं तनाव से मुक्ति	02
2.	यज्ञ भावना	03
3.	स्वामी श्रद्धानन्द और समाज का पुनरुत्थान	04
4.	जीवन यात्रा कैसे बिताएं?	06
5.	स्वाध्याय से जीवन को सुखी बनाएं	07
6.	लव-जेहाद : जरा विचार करें	10
7.	शल्य चिकित्सा के पितामह 'आचार्य सुश्रुत'	11
8.	एक सच्चा भक्त 'स्वामी दयानन्द'	12
9.	आर्य समाज ने बचाया अफ्रिका का हिन्दू समुदाय	14
10.	आखिर अन्धविश्वास को कब मिलेगा मोक्ष?	15
11.	हमारे पूर्वज मूर्ख थे या पाश्चात्यों के पूर्वज?	17
12.	क्रान्तिकारी आन्दोलन का प्रथम शहीद 'खुदीराम बोस'	18
13.	संस्कृत-दिवस	20
14.	गर्भपात : एक गूंगी चीख	21
15.	गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय	24

संपादकीय

ध्यान से पाएं तनाव से मुक्ति

आधुनिक समय में आदमी अमीर हुआ है किन्तु यह अमीरी, यह समृद्धि बाहरी है, उथली है। अन्दर से तो मुनष्य और भी दरिद्र हो रहा है। जैसे-जैसे बाहरी समृद्धि के लिए मानवता, पूरी मनुष्य जाति पागलपन में दौड़ती है, अन्दर से और अधिक दरिद्रता आती जाती है। धन आता जाता है और आत्मा खोती जाती है। इसलिए पूरी मानवता उदास है, खिन्न है। उसके जीवन में तो कोई उमंग दिखाई नहीं देती, कोई रस का झरना नहीं झरता। बस जी रहे हैं, बिना जीवन्तता के ही जी रहे हैं। या कहें जीवन को खींच रहे हैं, रबर की तरह। जितना खींचते हैं तनाव और बढ़ जाता है, उदासी और गहरी हो जाती है। जो सांसारिक पदार्थों से तृप्त होने की योजना बनाता है उसे अन्त में निराशा और हताशाओं के सिवा कुछ हाथ नहीं लगता क्योंकि संसार के जितने भी पदार्थ हैं, पति-पत्नी, बच्चे, गाड़ियाँ, बैंक-बैलेंस,पद-प्रतिष्ठा वह एक ही क्षण में छिन जाती है। फिर यदि धन-दौलत से आंतरिक तृप्ति मिलती तो कितने ही राजा-महाराजा तृप्त हो गये होते? मिलियन-बिलियन, डॉलर के स्वामी भी उतने ही असन्तोष और अन्दर के खालीपन से भरे हुए हैं जितना कि एक सड़क छाप भिखारी। इसलिए अन्दर की समृद्धि ही असली अमीरी है। आन्तरिक सम्पन्नता ही सच्ची सम्पन्नता लेकर आती है।

पतंजलि ने कहा- **तदाद्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्** अर्थात् स्वयं को पा लेना ही सच्ची सम्पन्नता है। स्वरूप को पा लेने के बाद कुछ पाना शेष नहीं रहता। अपनी आत्मा ही सबसे बड़ा खजाना है। वही परम तृप्ति, वही परम आनन्द है। बाहर की चकाचौंध में आँखें सत्य देखने का सामर्थ्य खो देती हैं। रजोगुण का मतवाला शोर कानों में सत्य सुनने में सामर्थ्यहीन बना देती है। इसलिए प्राणों की प्यास का पता नहीं लग पाता। हृदय की आवाज ही सुनाई नहीं पड़ती कि वह क्या चाहता है? हमारी श्वास निरन्तर क्या तलाश रही है, इसकी ओर कभी ध्यान ही नहीं जाता। दौड़ती जिन्दगी के साथ दौड़ते-दौड़ते थोड़ा ठिठक कर रुक जायें।

दो पल जीवन गति को विश्राम लेने दें, ताकि इस बीच आप देख सकें, कहीं सारी दौड़ अर्थहीन तो नहीं होने जा रही? दो पल का विश्राम ताकि आप देख सकें कि आपकी गहन आन्तरिक चाह क्या है? परमात्मा की मौलिक माँग क्या है। पूरे प्राणों के साथ, पूरी ऊर्जा, पूरी जीवटता के साथ यह देखना शुरु करते ही, आप थोड़ा गहरा उतर जाते हैं। गहराई में उतरते-उतरते आपको न केवल आत्मा की असली प्यास का परिचय मिलता है बल्कि आत्मा मिल जाती है। अपना आपा मिल जाता है। आनन्द से मिलन हो जाता है, स्वरूप को पा लेना ही, स्वयं में उतर जाना ही ध्यान है। ध्यान के लिए ब्रह्म मुहूर्त का समय सर्वोत्तम है। इस समय सम्पूर्ण प्रकृति रहस्यमयी होती है। शांत और नीरव होती है। मन में उथल-पुथल कम होती है। इसलिए चित्त सरलता से ध्यानस्थ हो सकता है।

1. शौच आदि से निवृत्त होकर निश्चित आसन पर बैठ जाएं।
2. सिर, गर्दन और रीढ़ की हड्डी को एक सीध में रखें।
3. श्वास को तेजी से बाहर निकालें। श्वास को अन्दर लेने में जोर न दें, श्वास अपने आप अंदर आएगी, केवल बाहर तेजी से निकालें।
4. श्वास निकालते समय अनुभव करें कि श्वास गुदा द्वार के ऊपर उठ रही है। गुदा द्वार में संकोच करें, जैसा मल को रोकते समय करते हैं।
5. केवल श्वास निकालने पर जोर दें।
6. अनुभव करें बीच से शक्तियां ऊपर उठ रही हैं।
7. श्वास निकालने के क्रम में तीव्रता लायें।
8. दस मिनट तक श्वास निकालने का क्रम जारी रखें।
9. श्वास को शांत हो जाने दें और स्वाभाविक रूप से बहने दें।
10. श्वासों पर ध्यान केन्द्रित करें। श्वास बाहर जा रही है, जीवन जा रहा है। श्वास अन्दर आ रही है, जीवन आ रहा है। इन भावों के साथ श्वासों के प्रवाह को देखें।
11. श्वास कम और अधिक मन्द हो रही है....सहज.....मन्द..... जीवन जा रहा है, जीवन आ रहा है। श्वासें मध्यम होती जा रही है। शरीर निष्प्राण हो गया है जैसे शरीर कोमा में चला गया हो।
12. सब कुछ स्थिर शांत हो गया है, पूरा अस्तित्व ठहर गया है, सम्पूर्ण शांत.....सर्वं शान्तम्..... इस प्रकार का भाव लाते हुए 20 मिनट अभ्यास करें। इससे आपको निम्न लाभ होंगे :-

1. तनाव-मुक्ति तथा अपूर्व शान्ति की प्राप्ति।
2. जब कभी दिन में तनाव की स्थिति हो आधे घण्टे का यह अभ्यास किया जा सकता है।
3. अभ्यास कुर्सी या सोफे पर बैठकर भी किया जा सकता है। जमीन पर आसन पर बैठें तो उत्तम रहेगा।
4. चित्त एकाग्र तथा सामान्य-विपरीत स्थितियों में उद्वेलित नहीं होता।

- कुलवंत सिंह सैनी

यज्ञ भावना

संसार में जो शुभ कर्म हैं और जो श्रेष्ठ कर्म करने वाले व्यक्ति हैं उनकी रक्षा सदैव राजा को करनी चाहिए। यज्ञ ही राष्ट्र का आधार है। इसीलिए पवित्र वेद में कहा गया है कि - **अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः** अर्थात् यह यज्ञ सम्पूर्ण भुवन का केन्द्र बिन्दु नाभि स्थल है। यज्ञ सम्पूर्ण श्रेष्ठ कर्मों को कहते हैं। हवन को भी यज्ञ कहते हैं। आज विश्व का प्रत्येक व्यक्ति पर्यावरण के प्रदूषण को लेकर चिन्तित है। लेकिन कोई भी समाधान नहीं हो पा रहा है। यदि यज्ञ को सरकारी स्तर पर मान्यता देकर प्रत्येक कार्यालय, विद्यालय आदि स्थानों पर प्रतिदिन अनिवार्य कर दिया जाए तो इस विकट समस्या का समाधान यथा शीघ्र हो जायेगा। इसलिए मन्त्र में परम पिता ने निर्देश दिया है कि राजा को यज्ञ और यज्ञपति की रक्षा करनी चाहिए।

व्यापक अर्थ यज्ञ के किये जायें तो वे सारे कार्य यज्ञ में ही समाहित हो जाते हैं जो निःस्वार्थ भावना से प्राणीमात्र के कल्याण को ध्यान में रखकर किये जाते हैं।राज्य में अराजकता तभी फैलती है जब यज्ञ भावना अर्थात् मिल-बाँट कर खाने की भावना को कुचल कर राक्षसी प्रवृत्तियाँ फलती-फूलती हैं। जब जमाखोरी की प्रवृत्ति पनपती है तब हजारों सुखों का ग्रास छीनकर एक व्यक्ति बैठ जाता है और तभी अराजकता फैलती है।

इसी बात को जब भरत वन में रामचन्द्र जी से मिलने गये तब श्रीराम ने प्रश्न पूछते हुए निर्देश दिया था :-

कच्चित् स्वादुकृतं भोज्यमेको नाश्नासि राघव।
काच्चिदाशं समानेभ्यो मित्रेभ्यः संप्रयच्छसि।।

अर्थात् हे रघुनन्दन! तुम स्वादिष्ट अन्न अकेले ही तो नहीं खा जाते ? उसकी आशा रखने वाले मित्रों को भी देते हो या नहीं ?
यह थी वैदिक राजोचित मर्यादा। यह परहित साधकता श्रीराम के जीवन में भी कूट-कूटकर भरी थी यज्ञ भावना की रक्षा करना ही राम का परम ध्येय था और उन्होंने आजीवन इस भावना को मरने नहीं दिया। रावण और बालि का वध करके उन्होंने उनके राज्य पर उन्हीं के भाइयों को प्रदान कर दिया। हमारा भारतीय इतिहास तो यज्ञ भावना से भरा हुआ है।

डॉ. विवेक आर्य

राजा भोज के विषय में कहा जाता है कि वे यज्ञीय भावना से ओत-प्रोत थे और समाज के लिए समर्पित व्यक्तियों का विशेष ध्यान रखते थे और उन्हें बहुत-बड़े पुरस्कार देते थे। महाराजा भोज के एक मन्त्री भोज की इस उदारता से परेशान थे। वे सोचते थे कि राजा यदि इस प्रकार मुक्त हस्त देता रहा तो राज्य में आर्थिक संकट खड़ा हो जायेगा। तो उन मन्त्री का साहस सीधे तो महाराज को रोकने का न हुआ उन्होंने जहाँ भोज भ्रमण करने जाते थे वहाँ एक पंक्ति लिख दी कि :-

आपदर्थे धनं रक्षेत्। अर्थात् आपत्ति के लिए धन की रक्षा करें।
राजा ने इस वाक्य को देखा तो समझ गया कि हमारी दान वृत्ति से चिन्तित किसी ने सचेत करने के लिए ऐसा लिखा है। तो उन्होंने उसके नीचे लिख दिया कि :-

श्रीमतामापदः कुतः। अर्थात् श्रीमानों पर आपत्ति कहाँ ?
भाव यह है कि जो व्यक्ति अपने धन को यज्ञीय भावना से व्यय करके श्री बना देता है उसको आपत्ति कभी नहीं आती है।
अगले दिन मन्त्री ने पुनः तीसरा चरण लिख दिया :-

सा चेदपगता लक्ष्मीः। अर्थात् यदि लक्ष्मी चली जाय तो !
राजा ने अगले दिन पुनः तीसरे चरण को पढ़ा और हँसते हुए चौथा चरण लिख दिया कि :-

संचितार्थो विनश्यति। अर्थात् संचित किया हुआ धन भी नष्ट हो जाता है।

अगले दिन जब मन्त्री ने चौथा चरण पढ़ा तो राजा भोज से क्षमा याचना की और कहा कि मैं आपकी यज्ञ भावना और दृढ़ ईश्वर विश्वास के आगे नतमस्तक हूँ। इसीलिए राजा भोज अधिक यशस्वी हुए आज भी लोग उन्हें सम्मान के साथ याद करते हैं।

- डॉ. विवेक आर्य
शिशु रोग विशेषज्ञ, नई दिल्ली।

स्वामी श्रद्धानंद और समाज का पुनरुत्थान

पिछले कुछ समय पहले भारत की कैथोलिक चर्च ने पहली बार आधिकारिक तौर पर माना था कि दलित ईसाइयों को ईसाई समुदाय के अन्दर छूआछूत और भेदभाव का सामना करना पड़ता है। '**द इंडियन एक्सप्रेस**' के मुताबिक ये जानकारी नीतिगत दस्तावेजों के जरिए सामने आई है। इसमें कहा गया था कि ईसाई समुदाय उच्च स्तर पर नेतृत्व में दलित ईसाइयों की सहभागिता न के बराबर है।' अखबार के मुताबिक ये दस्तावेज कैथोलिक बिशप कॉन्फ्रेंस ऑफ इंडिया में जारी किए गए थे। ये समुदाय की सर्वोच्च निर्णायक संस्था है। कहने को तो यह संस्था सामाजिक तौर पर पिछड़े लोगों से हर तरह से भेदभाव खत्म करने और उनके उत्थान के लिए प्रयास करती है लेकिन इसका मूल उद्देश्य गरीब और सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों को ईसाइयत में परिवर्तन करना है। इस खबर को पढ़कर अब स्वामी श्रद्धानन्द पुन: प्रासंगिक हो जाते हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द जी

आज देश व सर्व मजहबों के मालिकों को समझ जाना चाहिए कि जातीय समस्या धर्म का नहीं बल्कि समाज की एक बुराई का विषय है यह बुराई सामाजिक है तो हल धार्मिक कैसे? इस समस्या का समाधान किसी का धर्म परिवर्तन करना नहीं बल्कि स्वामी श्रद्धानंद जी के द्वारा जो आह्वान किया गया ठीक उसी तरह। सब जानते हैं कि डॉ. अम्बेडकर से दशकों पहले आर्य समाज ने दलितोद्धार का सन्देश दिया था। धार्मिक स्तर पर लोगों को जागरूक कर बताया कि वेद का सन्देश ईश्वर द्वारा ब्राह्मणों से लेकर शूद्रों सभी के लिए दिया गया है और सामाजिक स्तर पर भी उनके साथ भोज कर छुआछूत पर प्रहार किया। स्थान-स्थान पर विद्यालय और गुरुकुल खोले गये जिससे शिक्षा के माध्यम से समाज में उच्च स्थान प्राप्त हो सके, आत्म निर्भर बनाने के लिये उद्योग स्थापित किये गये, मंदिरों, सार्वजानिक कुओं में प्रवेश आरम्भ किया गया तथा सहभोज आरम्भ किये गये जिसमें दलित भाई के हाथ से ब्राह्मण भोज करते थे।

दरअसल, छोटी-बड़ी जाति एक सोच है कि यह इन्सान छोटा या बड़ा, छूत-अछूत है लेकिन इन लोगों द्वारा उनका धर्म-परिवर्तन कर इससे बाहर निकलने के लिए दूसरी समस्या खड़ी कर दी गयी। पहली समस्या सिर्फ भेदभाव तक सीमित थी किन्तु दूसरी समस्या संघर्ष खड़ा करती है और हिंसा की ओर अग्रसर करती है। अगर इतिहास उठाकर देखा जाए तो पता चलेगा कि मुख्यत: धर्म-परिवर्तन के शिकार ज्यादातर वे ही लोग होते हैं जो गरीब अशिक्षित समुदाय और आदिवासी समुदायों से सम्बन्ध रखते हैं। आदिवासियों को बड़े स्तर पर इस धर्म से उस धर्म में खींचने का प्रयास चलता रहता है। ये संगठन इन लोगों पर मजहब तो थोप देते हैं लेकिन इन तबकों के सामाजिक और आर्थिक तरक्की की बात नहीं करते हैं न ही ये संगठन जातीय व्यवस्था के खात्मे की बात करते हैं। अफसोस इस बात का भी है कि बड़े-बड़े दलित नेता भी इस साम्प्रदायिक मुहीम के खिलाफ कुछ कारगर कदम नहीं उठाते हैं क्योंकि इस मुहीम के पीछे एक राजनीतिक मंशा छिपी हुई है अर्थात् वोट की राजनीति के लिए कोई किसी को नाराज नहीं करना चाहता है। अन्यथा उस समाज को उसी स्तर पर शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार के अवसर देकर उसे गले लगाकर सामाजिक उन्नति भी की जा सकती है। जातीय समस्या का हल मजहब बदलना नहीं है। इसका तो राजनैतिक हल होना चाहिए बेहतरीन शिक्षा बेहतर नागरिक मूल्य व्यापक रोजगार का सृजन यदि नहीं होगा तब तक राजनैतिक और धार्मिक शोषण बंद नहीं होगा।

किसी भी छिटपुट हिंसा के बाद अक्सर दलितों को बौद्ध, ईसाई या मुस्लिम बन जाने से मुक्ति मार्ग समझाया जाता है। दलितों के बौद्ध या ईसाई बनने से क्या होगा? कुछ नहीं, मंदिरों की जगह नये पगोडा-बौद्ध मठ या चर्च बढ़ जायेंगे घंटी की जगह हाथ से घुमाने वाला झुनझुना होगा या गले में क्रॉस चिह्न और मुंह में '**ऊं मनि पद्मे हुमष्**' मंत्र होगा, लेकिन पुकारने का शब्द नहीं

बदलता। अरे देखो ये वही है! बौद्ध, ईसाई के खोल में छुपा दलित! इसलिए फिर वही बात दोहराते हैं कि यह समस्या सामाजिक है इसमें धर्म का कोई हस्तक्षेप नहीं है। एक ही सम्प्रदाय में मस्जिदें अलग-अलग हैं, चर्चों में भेदभाव है। कैथोलिक बेपिस्ट को बिल्कुल पसंद नहीं करता और शिया-सुन्नी को।

जब-जब राष्ट्र और समाज पर विपदा आती है तो एक शिक्षक सबसे पहले जागता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी जानते थे अशिक्षा और गरीबी जहाँ होती है वहाँ बहुत जल्दी धर्म के ढोल बजते हैं। स्वामी जी इन लोगों के धार्मिक षड्यंत्र को समझ गये थे कि दलित पिछड़ों का धर्मांतरण कर रही मिशनरीज को किसी गरीब व दलित की बिल्कुल चिंता नहीं है बल्कि इन्हें चिंता है अपने सम्प्रदाय की जिसकी संख्या ये लोग यहाँ बढ़ाकर राज करना चाहते हैं।

20 मई 1924 को मद्रास के गोखले हाल में मर्म स्पर्शी भाषण देते हुए स्वामी श्रद्धानन्द ने कहा था - **'पुरोहित आदि के अहंकार के कारण आपके यहा ब्राह्मण ब्राह्माणेतरो का झगड़ा तो चल ही रहा था, अब उससे भी अधिक बुरा एक झगड़ा आपके सामने खड़ा होने वाला है। यदि आपने अस्पृश्य कहे जानेवाले भाईयों के उद्धार की ओर विशेष ध्यान न दिया तो मैं आपको सचेत करता हूँ कि वह दिन दूर नहीं, जब आपके दलित भाई जिन्हें आप पंचम कहते हैं, आपसे सब तरह का सम्बन्ध तोड़ देंगे। या तो सब के सब दूसरे सम्प्रदायों में चले जायेंगे अथवा अपनी जाति ही अलग बना लें। मैं स्वयं कमजोर, रोगी और वृद्ध होता हुआ सारे देश में घूम जाऊँगा। दलित भाईयों का संगठन करूँगा और उनसे कहूँगा कि वे हर ब्राह्मण और अब्राह्मण को स्पर्श करके वैसा ही भ्रष्ट कर दे जैसा आप उनको मानते हैं। तब निश्चय ही आप उनके पैरों में माथा टेक देंगे।'** इस प्रकार के क्रान्तिकारी विचार रखने वाले स्वामी श्रद्धानंद के अस्पृश्यता को बढ़ावा देने वाले लोगों के मुँह पर करारा तमाचा मारा था।

साभार : राजीव चौधरी

आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

'आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र' का भव्य स्वरूप

आर्यसमाज अपने स्थापना काल से ही सामाजिक रूढ़ियों, पाखण्ड, अन्धविश्वास, गुरुड़मवाद पर कड़ा प्रहार करता रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप समाज में अनेक प्रकार के परिवर्तन देखने को मिलते हैं। जहाँ तपस्वी विद्वानों ने अपना सर्वस्व अर्पण कर भारतीय संस्कृति के आधार वेद का प्रचार-प्रसार करने में अपनी कोई लाभ-हानि नहीं देखी, वहीं गीत, भजन व उपदेश के माध्यम से दादा बस्तीराम जी, चौधरी पृथ्वीसिंह बेधड़क जी, मंगल वैद्य जी, स्वामी भीष्म जी जैसे अनेक भजनोपदेशकों ने अपनी जान हथेली पर रख कर वेद का प्रचार-प्रसार किया।

आचार्य देवव्रत जी महामहिम राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश के मन में हमेशा से ही यह भाव रहा है कि गांव, देहात में वेद का प्रारम्भिक प्रचार भजनोपदेशक के माध्यम से जितना कारगर हो सकता है उतना अन्य से नहीं। इसी भावना को मन में रखते हुए गुरुकुल कुरुक्षेत्र में **'आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र'** की स्थापना की गई है। इस प्रशिक्षण केन्द्र पर विधिवत् प्रशिक्षण **01 अप्रैल** 2017 से प्रारम्भ हो चुका है। जो भी प्रशिक्षण प्राप्त करने का इच्छुक व्यक्ति है उसके आवास, प्रशिक्षण एवं भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से नि:शुल्क रहेगी। प्रशिक्षण के बाद गुरुकुल के माध्यम से ही उचित मानदेय पर अपनी सेवा भी प्रदान कर सकेंगे। इच्छुक युवा व महानुभाव सम्पर्क करें :-

कुलवंत सिंह सैनी, प्रधान गुरुकुल कुरुक्षेत्र
मोबाइल - 9996026304

नन्दकिशोर आर्य,
मो-94664 36220, 86890 01220

गुरुकुल कार्यालय,
01744-238048, 238648

जीवन यात्रा कैसे बिताएं ?

ईश्वर की असीम अनुकम्पा से हमें यह अमूल्य धरोहर रूपी मनुष्य जीवन प्राप्त हुआ है। इस जीवन को किस प्रकार अतिवाहित करना है, यह हमारे ऊपर ही निर्भर है। जीवन एक यात्रा ही है अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर। इस जीवन यात्रा में तो सुख और दु:ख दोनों ही प्राप्त होते रहते हैं परन्तु इन हर प्रकार की परिस्थितियों में किस प्रकार रहना है यह हमारे ऊपर है। जिसको इन परिस्थितियों में अच्छी तरह रहना आ गया उसको समझना चाहिए कि जीना आ गया। सुखमय वातावरण में तो सभी सुखी होते और दु:खमय स्थिति में तो सभी लोग दु:खी होते हैं। परंतु दोनों परिस्थितियों में सम रहना अर्थात् सुख में अत्यन्त सुखी न होना और दु:ख की स्थिति में अत्यन्त दु:खी न होना ही बुद्धिमत्ता है। यही जीवन जीने की कला है।

वास्तव में जीवन जीना तो उसी का माना जायेगा जिसके सामने पहाड़ जितना दु:ख आकर खड़ा हो जाए फिर भी वह कभी हताश निराश नहीं होता, परेशान नहीं होता, खिन्न नहीं होता किन्तु सदा सर्वदा आनन्द से ही युक्त रहता है। यह तो मन को साधने वाले, मन को पूरी तरह अपने नियन्त्रण में रखने वाले किसी महान साधक का ही कार्य है। इसके लिए एक दृढ़ संकल्प अथवा इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है। हमारा यह संकल्प होना चाहिये कि चाहे कितना भी दु:ख क्यों न आ जाए किन्तु मैं कभी भी दु:खी होऊंगा ही नहीं। न कोई व्यक्ति मुझे दु:खी कर सकता है और न ही कोई परिस्थिति।

हम यदि ईश्वर की ही निरन्तर उपासना करते रहेंगे तो निश्चित है कि हमारे अन्दर भी ईश्वर के गुण अवश्य आएंगे। जिस प्रकार ईश्वर कभी भी दु:खी नहीं होता सदा अपने आनन्द रस से युक्त रहता है क्योंकि उसका स्वभाव ही ऐसा है। जैसे कि वेद में कहा भी है कि '**स्वर्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नम:।**' सुख ही जिसका स्वरूप है उस महान परब्रह्म को नमन है। जैसे एक राजा का पुत्र राजकुमार होता है और उसी का राज्य अथवा राजा के उन संपत्तियों पर अधिकार होता है। ठीक ऐसे ही हम सब भी आनन्द स्वरूप ईश्वर के पुत्र ही तो हैं फिर उसके आनंद के अधिकारी क्यों नहीं? कुछ लोगों के जीवन में थोड़ी-सी भी समस्या आ जाये तो घबरा जाते हैं, चिल्लाने लग जाते हैं कि हाय यह क्या हो गया? ऐसा तो हमने कभी सोचा ही नहीं था। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था, इस प्रकार विलाप करने लगते हैं। वहीं ऐसे भी कुछ लोग होते हैं जो शान्त रहते हैं और कहते हैं, कोई बात नहीं, ऐसा तो होते रहता है, सभी के जीवन में होता है। किसी कवि ने बड़े ही सुन्दर ढंग से लिखा है :-

दु:ख में मत घबराना पंछी ये जग दु:ख का मेला है।
चाहे भीड़ बहुत अम्बर पे उड़ना तुझे अकेला है।
नन्हे कोमल पंख ये तेरी और गगन की ये दूरी।
बैठ गया तो होगी कैसे मन की अभिलाषा पूरी
उसका नाम अमर है जग में जिसने संकट झेला है।
चाहे भीड़ बहुत अम्बर पे उड़ना तुझे अकेला है।

जिस प्रकार हम किसी गन्तव्य स्थल की प्राप्ति हेतु अनेक प्रकार के साधनों को बदलते हुए उस लक्ष्य तक पहुंचते हैं, ठीक उसी प्रकार यह मनुष्य शरीर भी एक साधन मात्र है जिसके माध्यम से हम अपने जीवन का अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। जो व्यक्ति इसको साधन मात्र मानता है वह इस शरीर के प्रति आकर्षित नहीं होता, इसके मोह में नहीं फंसता और जो इस शरीर को ही सब कुछ मान लेते हैं वे शरीर की वृद्धि होने से अपनी वृद्धि मानकर प्रसन्न हो जाते हैं और किसी प्रकार की शारीरिक हानि हो जाये तो अपनी हानि मानकर दु:खी हो जाते हैं।

इस प्रकार के मनुष्यों के लिए महर्षि व्यास जी ने एक शब्द प्रयोग किया है '**अप्रतिबुद्ध:**' अर्थात् महामूर्ख कहा है। अत: जिस प्रकार हम अपनी यात्रा के समय में यान-वाहन की हानि से दुखी नहीं होते सामान्य रहते हैं वैसे इस जीवन में कुछ हानि हो जाये तो भी दु:खी हुए बिना सामान्य रूप से जीवन व्यतीत कर सकते हैं। तो आइए आज से ही हम संकल्प धारण करें कि अपने जीवन को आनन्दमय बनाते हुए अन्यों के जीवन में भी आनन्द भर दें।

साभार-आचार्य नवीन केवली

स्वाध्याय से जीवन को सुखी बनाएं

मनमोहन आर्य

संसार में जितने भी प्राणी हैं वे सब सुख की कामना करते हैं, दुःख की कामना कोई भी नहीं करता। ईश्वर भी किसी को अपनी ओर से दुःख देना नहीं चाहता। उसने यह सारी सृष्टि मनुष्य आदि सभी प्राणियों के सुख के लिए बनाई है। फिर भी सभी प्राणी सुख व दुःख दोनों से ग्रस्त दिखाई देते हैं। प्रश्न है कि क्या मनुष्य दुःखों से बच सकता है? इसका उत्तर है कि पूर्णतया तो नहीं परन्तु काफी सीमा तक मनुष्य दुःखों से बच सकता है। दुःखों से बचने के लिए उसे दुःख निवृत्ति व सुखों के विस्तार करने वाले उपायों व कार्यों को करना होगा। यह प्रमुख कार्य हैं सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय, साधना वा पुरुषार्थ एवं सदाचार वा श्रेष्ठ आचरण।

इन साधनों को प्रयोग में लाकर मनुष्य अपने जीवन के बहुत से दुःखों को दूर कर सकता है। जिस मनुष्य के जीवन से इस प्रकार से दुःख दूर होते व कम होते हैं, उसके जीवन में निश्चय ही सुखों की वृद्धि होती है। इसके अनेक उदाहरण देखे जाते हैं। मान लीजिए कि एक व्यक्ति नशा करने के लिए शराब पीता है। इसमें उसके धन का अपव्यय होता, सामाजिक प्रतिष्ठा खराब होती है, भले लोग उससे दूरी बनाते हैं, परिवार के लोग भी उसके इस कार्य को पसन्द नहीं करते, वह व्यक्ति स्वयं भी धनाभाव होने, शराब व नशे से शारीरिक रोग व बलहीन होने के कारण दुःखी रहता है। ऐसी स्थिति में जो मनुष्य शराब का सेवन नहीं करते व करने वाले सेवन करना छोड़ देते हैं, तो उनके जीवन में शराब के सेवन से होने वाले दुःख नहीं होते और अच्छे स्वास्थ्य, धन की सुलभता व सामाजिक प्रतिष्ठा आदि से उनका जीवन सुख व खुशियों से युक्त होता है, अतः मनुष्य को जीवन में रोग व आलस्यकारी भोजन व अनावश्यक खर्चीली चीजों को स्थान नहीं देना चाहिये। ऐसा करके ही अनेक सुख प्राप्त किये जा सकते हैं और अनेकानेक दुःखों से बचा जा सकता है।

जीवन को सुखी बनाने का पहला उपाय वेद व ऋषि कृत ग्रन्थों का स्वाध्याय वा अध्ययन है। वेद और वैदिक साहित्य के अध्ययन से आत्मा पर अच्छे संस्कार पड़ते हैं जिनका प्रभाव ज्ञानवृद्धि होता है। यह ज्ञान वृद्धि आध्यात्मिक व सांसारिक सभी प्रकार की होती है। ज्ञान ही सुख का कारण होता है और अज्ञान दुःख का। एक संस्कृत लोकोक्ति बहुत प्रचलित है **'सर्वेषां दानानां श्रुतिज्ञानं विशिष्यते'** अर्थात् सभी प्रकार के दानों में वेद के ज्ञान का दान करना सबसे बड़ा दान होता है। इसी प्रकार से सभी प्रकार की पुस्तकों के ज्ञान की तुलना में वेद और वैदिक साहित्य का ज्ञान श्रेष्ठ व सर्वोत्तम है। ज्ञान से होता यह है कि मनुष्य असत्य का त्याग करने में समर्थ होता है।

असत्य का त्याग ही दुःख निवारण का प्रमुख आधार है। संसार में सबसे अधिक सुखी व आनन्दित कोई होता है तो वह वेदज्ञानी संन्यासी व विद्वान् ही होता है। ज्ञान की पराकाष्ठा ही वैराग्य को उत्पन्न करती है। वैराग्य का अर्थ होता है संसार व इसकी वस्तुओं के प्रति राग व धन-वैभव की लालसा व वासना की समाप्ति। अपने व पराये का भेद भी वैराग्यावस्था को प्राप्त व्यक्ति में नहीं होता। जब संसार और इसकी वस्तुओं में राग व प्रेम, इनकी प्राप्ति व उपभोग व धन के परिग्रह में अनिच्छा की भावना उत्पन्न हो जायेगी तो इनसे होने वाला दुःख स्वतः समाप्त हो जायेगा।

आजकल दुःख का एक कारण अत्यन्त निर्धनता व दूसरा आवश्यकता से अधिक धन का होना है। यह धन लोभी मनुष्यों के पास अधिक होता है। लोभ ही समस्त पापों का कारण भी होता है। यदि धनी व्यक्ति वेद ज्ञान के प्रचार प्रसार में अपने अतिरिक्त धन का दान नहीं करता तो इसका अर्थ होता है कि वह वेद की शिक्षा **'कस्य स्विद् धनम्'** के प्रतिकूल आचरण कर रहा है। वेद धन को ईश्वर का बताता है और वेदों में **'तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्य'** की शिक्षा वा आज्ञा ईश्वर द्वारा दी गई है। धन लिप्सु व्यक्ति में धन की पूर्ति न होने के कारण दूसरों के प्रति द्वेष उत्पन्न होता है। राग व द्वेष, यह दोनों ही मनुष्य के जीवन को दुःखमय बनाते हैं, अतः राग व द्वेष से उत्पन्न होने वाले दुःखों को दूर करने का उपाय वेद एवं वैदिक साहित्य का अनुशीलन व अध्ययन है व उसके अनुसार अपने कर्तव्यों का निर्वहन है। वेदों के साथ दर्शन, उपनिषद्, मनुस्मृति, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि ग्रन्थों का अध्ययन भी धर्म व कर्तव्य के ज्ञान में सहायक है जिससे मनुष्य अनेक दुःखों से बचता है।

दुःखों से बचने का अन्य उपाय वेदाध्ययन से उत्पन्न ज्ञान के अनुसार साधना व पुरुषार्थ करना है। यह भी जान लें कि वेदाध्ययन में समस्त वेदानुकूल साहित्य उपनिषद्, दर्शन, प्रक्षेपरहित

मनुस्मृति, सत्यार्थप्रकाश व ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि का अध्ययन सम्मिलित है। साधना में ईश्वर व आत्मा का ज्ञान प्राप्त कर योग विधि से ईश्वरोपासना से ईश्वर प्राप्ति व ईश्वर साक्षात्कार का अभ्यास करना होता है। ईश्वर साक्षात्कार से अभिप्राय ईश्वर का प्रत्यक्ष करना है। यह ध्यान देने योग्य बात है कि प्रत्यक्ष गुणों का होता है, गुणी का नहीं।

सृष्टि की उत्पत्ति, पालन व प्रलय सहित संसार में सर्वत्र ईश्वर की व्यापकता, सर्वशक्तिमत्ता, न्याय, कर्मानुसार मनुष्यादि अनेक योनियों में जीवात्माओं का जन्म-मरण-पुनर्जन्म, सृष्टि के आदि में वेदों का ज्ञान मिलना आदि सभी को दृष्टिगोचर हो रहा है। यह कार्य परमात्मा द्वारा किये जा रहे हैं, अत: परमात्मा का प्रत्यक्ष इनसे हो रहा है। सभी मनुष्य व प्राणियों के शरीरों में ज्ञान व कर्म की चेष्टा करने वाला चेतन जीवात्मा भी अपने गुणों से प्रत्यक्ष होता है। वेदों सहित ज्ञान के इतर ग्रन्थों के स्वाध्याय से आध्यात्मादि ज्ञान को प्राप्त कर जीवन सफल किया जा सकता है।

स्वाध्याय वैदिक पद्धति व वैज्ञानिक दृष्टि से ईश्वर, जीव व प्रकृति विषयक वेद एवं वैदिक ग्रन्थों के अध्ययन को कहते हैं। हम अध्ययन आत्मा की उन्नति व सुख प्राप्ति के लिए करते हैं। यदि आत्मा ज्ञान से पूर्ण नहीं होगा तो मनुष्य पूर्ण सुखी नहीं हो सकता। समाज में ऐसे व्यक्ति भी देखे जाते हैं जो अज्ञानी व अनपढ़ होते हैं। शारीरिक क्षमतायें होते हुए भी वे ज्ञान की कमी व अभाव के कारण किसी भी विषय का भली प्रकार से विचार नहीं कर पाते और जीवनोन्नति के कार्य में सबसे पीछे रह जाते हैं। उनका जीवन प्राय: दासत्व का जीवन होता है। इस कारण उनका जीवन दु:खों व अभावों में बीतता है। दूसरी ओर विद्वान् मनुष्य ईश्वर, आत्मा और सृष्टि विषयक यथार्थ ज्ञान रखने के कारण सभी कार्यों को जान व समझकर कर सकता है जिससे वह धनोपार्जन करके अपने जीवन को शास्त्रानुसार वा अपनी इच्छा व भावना के अनुसार व्यतीत कर सकता है, अत: मनुष्य को ज्ञान प्राप्ति के लिए सभी सम्भव प्रयत्न करने चाहिये। ऐसा करने से ही उसके जीवन के दु:ख कम होकर वह सुख व आनन्द की उपलब्धि कर सकता है।

ज्ञान प्राप्ति के उपाय हैं विद्वानों के उपदेशों को सुनना वा इच्छित विषयों का ज्ञानयुक्त साहित्य पढ़ना। स्वाध्याय से इच्छित विषयों को जान व समझ कर ही मनुष्य ज्ञानी होता है। मनुष्य भाषा सीख ले और कुछ व अधिक विषयों का साहित्य पढ़ ले तो उसमें वह सामर्थ्य आ जाता है कि अधीत विषय से जुडे प्रश्नों व समस्याओं का अपनी ऊहा आदि से हल ढूंढ सके। अध्ययन किये हुए मनुष्य की स्थिति अध्ययन न किये हुए व कम अध्ययन किये हुए मनुष्यों से अच्छी होती है। आजकल की समाज व्यवस्था में इसके अपवाद भी दिखाई देते हैं। कुछ अल्प शिक्षित लोग बड़े बड़े व्यवसाय कर रहे हैं और उच्च शिक्षित लोग उनके यहां सेवा आदि कार्य करते हैं। बड़े बड़े राजनीतिक दलों के नेता अल्प शिक्षित होते हैं और उनके अधीन आजकल की दृष्टि से उच्च शिक्षित लोग उनके अधीन सेवा देते हैं।

हमारे शरीर में स्थित चेतन तत्व आत्मा का मुख्य उद्देश्य इस संसार को भली प्रकार से जानना है। ईश्वर है या नहीं? नहीं है तो क्यों नहीं और यदि है तो वह कैसा व कहां हैं? उसके गुण, कर्म व स्वभाव कैसे हैं? आत्मा का स्वरूप क्या है? यह सृष्टि कब, कैसे, किससे बनी? सृष्टिकर्ता का सृष्टि को उत्पन्न करने का उद्देश्य क्या है? इन व ऐसे अनेक प्रश्नों के उत्तर व प्रमाण अध्ययन वा स्वाध्याय करने से मिलने चाहियें और यह ज्ञान व उत्तर ऐसे होने चाहियें जिससे कि सभी कुतर्कियों व शंकालुओं को सन्तुष्ट व निरुत्तर किया जा सके। इसके साथ उन्हें ईश्वर के अस्तित्व व उसके गुण-कर्म-स्वभाव को मानने के लिए बाध्य भी किया जा सके। ईश्वर व जीवात्मा विषयक सभी प्रश्नों के उत्तर वेदों व वेदों की व्याख्या में लिखे गये ऋषि कृत ग्रन्थों के स्वाध्याय व अध्ययन से ही जाने जा सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति इन प्रश्नों के उत्तर जानना चाहे और वह इसके लिए वैदिक धर्म से भिन्न मत-मतान्तरों की धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन करे तो वैज्ञानिक व तर्क बुद्धि रखने वाला व्यक्ति कभी सन्तुष्ट नहीं हो सकता। यह बात हम अपने विवेक से कह रहे हैं। इसी कारण बहुत से लोग मत-मतान्तरों के प्रति उदासीन, निष्क्रिय या नास्तिक हो जाते हैं। नास्तिक मनुष्यों का होना ही यह सिद्ध करता है कि आस्तिक लोग उन्हें ईश्वर व आत्मा के विषय में सन्तुष्ट नहीं कर सके।

वेद, उपनिषद्, दर्शन, मनुस्मृति, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका से ऐसे सभी प्रश्नों के तर्क व यथार्थ उत्तर मिल जाते हैं। जिस प्रकार आजकल वैज्ञानिक होते हैं उसी प्रकार प्राचीन काल में हमारे ऋषि हुआ करते थे। वह ऋषि वेद व किसी अन्य ग्रन्थ की बात को आजकल के मत-मतान्तर के आचार्यों की भांति आंखे बन्द करके स्वीकार नहीं कर लेते थे अपितु उसकी सिद्धि तर्क व प्रमाणों से करते थे। जो मनुष्य तर्क से शून्य होकर किसी ग्रन्थ को पढ़ता है, उसे अध्ययन नहीं कहते। अध्ययन के लिए यह आवश्यक है कि वह उस विषय पर अधिक से अधिक प्रश्न करे और उसके अध्ययन में उन सभी प्रश्नों का उसे सन्तोषजनक समाधान मिलना चाहिये। यही कारण है कि प्राचीन काल में भारत ज्ञान व विज्ञान में विश्व में उन्नत देश था तथा विश्व

के सभी देशों के लोग यहां चरित्र और ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा लेने आते थे तथा हमारे देश के ऋषि, राजपुरुष व विद्वान् आदि भी दूसरे देशों में जाया करते थे। यह तभी सम्भव हुआ था जबकि उस समय के लोग वेदों व विज्ञान आदि इतर ग्रन्थों के अध्ययन में समय दिया करते थे। इसी कारण से ऋषियों ने सामाजिक नियम बनाया था कि शिक्षा सबके लिए अनिवार्य व निःशुल्क होगी। शिक्षा प्राप्त कर लेने के बाद भी लोग गृहस्थ आदि जीवन में वैदिक ग्रन्थों का स्वाध्याय किया करते थे।

यह भी उल्लेखनीय है कि प्राचीन काल से हमारे गुरुकुलों के आचार्य अन्तेवासी अपने शिष्य और शिष्याओं को उपदेश करते थे **'स्वाध्यायान्मा प्रमदः'** अर्थात् तुमने जीवन भर सद्ग्रन्थों का अध्ययन करना है। स्वाध्याय में कभी प्रमाद व आलस्य नहीं करना है। स्वाध्याय में यह शक्ति है कि मनुष्य स्वाध्याय की प्रवृत्ति से सभी सांसारिक कार्यों को करता हुआ भी वेद आदि समस्त वैदिक साहित्य का अध्ययन कर ईश्वर व आत्मा आदि विषयों का विशेयज्ञ बन सकता है। प्राचीन काल में सभी ऋषि-मुनि व उनके आश्रमवासी लोग ईश्वर, जीव, सृष्टि व अन्य सभी विषयों का उच्च स्तर का ज्ञान रखने वाले हुआ करते थे।

हम आज जो कुछ भी जानते हैं वह अध्यापकों व विद्वानों के उपदेश व प्रवचनों को सुनकर व उसके बाद उन विषयों की पुस्तकों का अध्ययन कर व उन्हें स्मरण कर ही जानते हैं। यदि हम धनोपार्जन में सहायक सांसारिक विषयों का अध्ययन करते हुए निजी जीवन में वेद और वैदिक साहित्य का भी अध्ययन करेंगे तो हम ऋषि-मुनि न सही, आध्यात्मिक व वैदिक विषयों के अच्छे ज्ञानी तो बन ही सकते हैं। हमारा तो यह भी अनुभव व विश्वास है कि केवल सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन कर ही मनुष्य इस स्तर का ज्ञानी बन सकता है कि उसके समान अन्य किसी मत-मतान्तर का अनुयायी व आचार्य भी उतना ज्ञान नहीं रख सकता।

हमारी दृष्टि में सत्यार्थप्रकाश, उपनिषद्, दर्शन, आयुर्वेद व वेद आदि पढ़ा हुआ मनुष्य इतना ज्ञानी होता है कि अन्य मत के लोग उससे आध्यात्मिक विषयों में चर्चा व तर्क आदि नहीं कर सकते, अतः हमें अपनी आत्मा व जीवन को सुख व आनन्द से युक्त करने के लिए अन्य स्कूली ग्रन्थों को पढ़ने के साथ अपने निजी समय में वेद आदि सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय भी अवश्य ही करना चाहिये। हम इस अवसर पर ऋषि दयानन्द को भी स्मरण करना चाहते हैं कि जिन्होंने वेदों का उद्धार केवल उनकी विलुप्त व अप्राप्य हस्तलिखित प्रतियों को प्राप्त कर व उनका प्रकाशन कराकर ही नहीं किया

अपितु उन्होंने वेदों के मंत्रों के यथार्थ अर्थ करने की पद्धति व शैली भी हमें प्रदान की और इसके साथ ही उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम समय तक वेद भाष्य का कार्य कर हमें ऋग्वेद भाष्य (आंशिक) और यजुर्वेद भाष्य पूर्ण संस्कृत व हिन्दी भाषा में प्रदान किया है। स्वामी दयानन्द जी की ऐसी कृपा है कि आज देवनागरी अक्षरों का ज्ञान हो जाने पर कोई भी साधारण अल्प शिक्षित मनुष्य वेदमन्त्रों का उच्चारण कर सकता है और उनके अर्थों को भी जान सकता है। वेदों के जानकार ऐसे लोग आर्यसमाज में बड़ी संख्या में मिलते हैं। महर्षि दयानन्द ने हमें वेदों पर आधारित प्रमुख ग्रन्थ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि भी प्रदान किये हैं। जिन लोगों ने इन्हें पढ़ा है और इसके अनुसार आचरण किया है, उनका जीवन धन्य व सफल है।

स्वाध्याय से प्रायः सभी प्रकार का ज्ञान व सिद्धियां प्राप्त की जा सकती है। स्वाध्याय को कम नहीं आँकना चाहिये। हमने जो यह लेख लिखा व अन्य लिखते हैं उसमें सबसे बड़ा योगदान हमारा स्वाध्याय ही है। हर लेखक अपनी सभी पुस्तकों को अपने स्वाध्याय व अध्ययन के आधार पर ही लिखता है और पुस्तक व लेखक की प्रसिद्ध होने पर उसे यश भी प्राप्त होता है, अतः किसी भी मनुष्य को स्वाध्याय से विरत कदापि नहीं होना चाहिये। ऋषियों की आज्ञा **'स्वाध्यायान्मा प्रमदः'** को एक व्रत के समान पालन करना चाहिये और स्वाध्याय से जो ज्ञान प्राप्त हो उसके प्रचार के लिए भी हर सम्भव प्रयास करने चाहिये तभी हमारा धर्म व संस्कृति बच सकती है, अतः मनुष्यों को स्वाध्याय को दुःख निवृत्ति हेतु अपना सिद्धान्त व नियम बना लेना चाहिये। ऐसा करने के लिए किसी धर्म व मत विशेष के ग्रहण व त्याग का आग्रह नहीं है। ऐसा होने पर आशा है कि मनुष्य को दुःख बहुत कम मात्रा में होंगे।

- मनमोहन कुमार आर्य

196, चुक्खूवाला-2, देहरादून 20081, मो-9412985121

लव-जेहाद : जरा विचार करें

आज पूरे भारत में विधर्मियों की टीम विभिन्न तरीकों से हिन्दू, सिख, जैन और बौद्ध आदि बहिन-बेटियों को विधर्मी बनाने के लिए **लव-जेहाद** का भयंकर षड्यंत्र चला रहे हैं, विधर्मियों को ये सब करने के लिए मस्जिद से गाड़ी, मकान और लाखों रुपये मिलते हैं। परिणाम एक-एक मुस्लिम युवक कई लड़कियों से निकाह और तलाक करते रहते हैं।

लगभग 10 वर्ष पूर्व की घटना है। तीन मुस्लिम युवकों ने तीन हिन्दू लड़कियों को लवजिहाद के चक्कर में फसाया। एक लड़की ब्राह्मण, दूसरी ठाकुर और तीसरी व्यापारी परिवार से थीं। लड़के तीनों मुस्लिम थे। वे तीनों जोड़े आर्यसमाज मन्दिर में पहुंचे और मंत्री जी को बताया कि हम विवाह करना चाहते हैं। मंत्री जी ने उन सबके नाम-पता व सम्पर्क सूत्र लिखा और उनको तीन-चार दिनों का समय मांगा। मंत्री जी ने जब उन सब के नाम, योग्यता आदि देखा तो आश्चर्य हुआ। सब लड़कियां हिन्दू, शिक्षित और सम्पन्न। वे तीनों युवक अशिक्षित, दरिद्र और मांसाहारी थे। इसलिये मंत्री जी को महसूस हुआ कि ये लड़कियां षड्यंत्र का शिकार होकर, अपना जीवन बरबाद करने जा रही हैं, इसलिये इन्हें बचाना चाहिये।

सायं 7.00 बजे मंत्री जी अपने घर से निकलकर सीधे व्यापारिक परिवार में पहुंचे और लड़की के पिता से मिले तथा उनको बताया कि आपकी प्यारी लाडली बेटी विधर्मी होने जा रही है, जो गलत है, आप अपनी बेटी को बचाइये। मंत्री जी अनुभवी थे, उन्होंने उस लड़की को भी समझाया, परिणाम लड़की का विवाह किसी योग्य व्यापारी परिवार में कर दिया गया। अब मंत्री जी क्षत्रिय (ठाकुर) परिवार के घर जा पहुंचे, उन्होंने लड़की के पिता से सीधे कहा कि आपकी लाडली बेटी क्षत्रियों की मर्यादा को भूलकर एक जाहिल विधर्मी के जाल में फंसने जा रही है।

क्षत्राणी एक विधर्मी की जोरू बने ये अनुचित है। ये बात सुनते ही ठाकुर साहब भड़क गये तथा सीधे बन्दूक उठाई और लड़की के सीने पर बंदूक रखकर बोले जान से मार दूंगा, लेकिन कुल को कलंकित न होने दूंगा। मंत्री जी ने उस लड़की को समझाया तथा पिता की फटकार ने उसके दिलो-दिमाग से लव-जेहाद का भूत दूर कर दिया। कुछ समय बाद ही योग्य क्षत्रिय वीर से उस लड़की का विवाह हो गया और उसका जीवन

बरबाद होने से बच गया। अगले दिन मंत्री जी ब्राह्मण देवता के घर जा पहुंचे तथा लड़की के पिता को बताया कि आपकी बेटी मुस्लिम युवक के चक्कर में फंसकर विधर्मी होने जा रही है। इतना सुनते ही पण्डित (ब्राह्मण) भड़क कर बोला, यह पतित है, भ्रष्ट है, मेरी बेटी नहीं है। मेरे घर से निकल जा, अब तेरे लिए मेरे घर में कोई जगह नहीं है। लड़की तो अज्ञानता व मूर्खता के कारण यही चाहती थी।

परिणाम उस लड़की ने मुस्लिम से निकाह कर लिया। कुछ समय बाद मुल्ला जी बोले इस्लाम को कबूल करो, न चाहते हुए भी इस्लाम को कबूल करना ही पड़ा, क्योंकि पिता तो उसकी शक्ल भी नहीं देखना चाहते थे। कुछ समय बाद वह गर्भवती हो गयी। मियांजी ने अपनी बीवी को गो मांस खाने के लिए मजबूर किया। अब समस्या बड़ी भयंकर हो गयी। आगे खाई, पीछे कुँआ। कहां जाये? क्या करें? कुछ दिन वैर-विरोध, झगड़ा-फसाद के बाद उस लड़की को मजबूर होकर आत्म हत्या करनी पड़ी थी। यह घटना मध्यप्रदेश की है। इस घटना से सभी बहनों को शिक्षा लेनी चाहिये और अपने अमूल्य जीवन की रक्षा करनी चाहिए।

प्रत्येक व्यक्ति मंत्री जी की तरह जागरुक रहते हुए, बहनों की रक्षा करें। ब्राह्मण वर्ग को जागरूकता के साथ अज्ञानता, संकीर्णता, आडम्बर आदि को छोड़ना होगा। कितना अनुचित विचार या अंधविश्वास है कि अपनी बेटी को समझाना भी उचित न समझा। बिना सोच-समझ के उसे घर से बेघर करके, विधर्मी होने के लिए परोक्ष रूप से सहायक हो गये। इस गलत सोच ने हिन्दू समाज को बहुत ही हानि पहुंचायी है। जागो प्यारे देशवासियों और अपनी बहन-बेटियों को हर हाल में विधर्मियों से बचाओ।

-आचार्य दिनेश शास्त्री

शल्य चिकित्सा के पितामह आचार्य सुश्रुत

आस्ट्रेलिया के रॉयल आस्ट्रेलियन कॉलेज ऑफ सर्जन, मेलबर्न में भारत के शल्य चिकित्सा (सर्जरी) के पितामह और **'सुश्रुत संहिता'** के प्रणेता **आचार्य सुश्रुत** की प्रतिमा लगायी गयी है जो हर भारतीय के लिये गर्व की बात है।

शल्य चिकित्सा के पितामह आचार्य सुश्रुत का जन्म छठी शताब्दी ईसा पूर्व में काशी में हुआ था। इन्होंने धन्वन्तरि से शिक्षा प्राप्त की। सुश्रुत संहिता को भारतीय चिकित्सा पद्धति में विशेष स्थान प्राप्त है।

सुश्रुत संहिता में सुश्रुत को विश्वामित्र का पुत्र कहा है। 'विश्वामित्र' से कौन से विश्वामित्र अभिप्रेत हैं, यह स्पष्ट नहीं। सुश्रुत ने काशीपति दिवोदास से शल्यतंत्र का उपदेश प्राप्त किया था। काशीपति दिवोदास का समय ईसा पूर्व की दूसरी या तीसरी सदी संभावित है। सुश्रुत के सहपाठी औपधेनव, वैतरणी आदि अनेक छात्र थे। सुश्रुत का नाम नावनीतक में भी आता है। अष्टांग संग्रह में सुश्रुत का जो मत उद्धृत किया गया है (वह मत सुश्रुत संहिता में नहीं मिलता) इससे अनुमान होता है कि सुश्रुत संहिता के सिवाय एक अन्य दूसरी संहिता भी सुश्रुत के नाम से प्रसिद्ध थी।

सुश्रुत के नाम पर आयुर्वेद भी प्रसिद्ध है। यह सुश्रुत राजर्षि शालिहोत्र के पुत्र कहे जाते हैं (शालिहोत्रेण गर्गेण सुश्रुतेन च भाषितम् - सिद्धोपदेशसंग्रह)। सुश्रुत के उत्तरतंत्र को दूसरे का बनाया मानकर कुछ लोग प्रथम भाग को सुश्रुत के नाम से कहते हैं, जो विचारणीय है। वास्तव में सुश्रुत संहिता एक ही व्यक्ति की रचना है।

सुश्रुत संहिता में शल्य चिकित्सा के विभिन्न पहलुओं को विस्तार से समझाया गया है। शल्य चिकित्सा के लिए सुश्रुत 125 तरह के उपकरणों का प्रयोग करते थे। ये उपकरण शल्य चिकित्सा की जटिलता को देखते हुए खोजे गए थे। इन उपकरणों में विशेष आकार के चाकू, सुइयां, चिमटियां आदि हैं। सुश्रुत ने 300 प्रकार की ऑपरेशन क्रियाओं की खोज की।

सुश्रुत ने कॉस्मेटिक सर्जरी में विशेष निपुणता हासिल कर ली थी। सुश्रुत नेत्र शल्य चिकित्सा भी करते थे। सुश्रुत संहिता में मोतियाबिंद के ओपरेशन करने की विधि को विस्तार से बताया गया है। उन्हें शल्य चिकित्सा द्वारा प्रसव कराने का भी ज्ञान था। सुश्रुत को टूटी हुई हड्डियों का पता लगाने और उनको जोडने में विशेषज्ञता प्राप्त थी। शल्य क्रिया के दौरान होने वाले दर्द को कम करने के लिए वे मद्यपान या विशेष औषधियां देते थे। मद्य संज्ञाहरण का कार्य करता था। इसलिए सुश्रुत को संज्ञाहरण का पितामह भी कहा जाता है। इसके अतिरिक्त सुश्रुत को मधुमेह व मोटापे के रोग की भी विशेष जानकारी थी।

आचार्य सुश्रुत श्रेष्ठ शल्य चिकित्सक होने के साथ-साथ श्रेष्ठ शिक्षक भी थे। उन्होंने अपने शिष्यों को शल्य चिकित्सा के सिद्धान्त बताये और शल्य क्रिया का अभ्यास कराया। प्रारम्भिक अवस्था में शल्य क्रिया के अभ्यास के लिए फलों, सब्जियों और मोम के पुतलों का उपयोग करते थे। मानव शारीर की अंदरूनी रचना को समझाने के लिए सुश्रुत शव के ऊपर शल्य क्रिया करके अपने शिष्यों को समझाते थे। सुश्रुत ने शल्य चिकित्सा में अद्‌भुत कौशल अर्जित किया तथा इसका ज्ञान अन्य लोगों को कराया। इन्होंने शल्य चिकित्सा के साथ-साथ आयुर्वेद के अन्य पक्षों जैसे शरीर सरंचना, बाल रोग, स्त्री रोग, मनोरोग आदि की जानकारी भी दी।

एक सच्चा भक्त 'ऋषि दयानन्द'

देशभर में एक मान्यता फैली हुई है भक्तिवाद के नाम से, जब भी भक्ति और भक्तों के बारे में चर्चा चलती है तो देश भर के अनेक साधु-सन्तों का नाम बड़े ही श्रद्धाभाव से लिया जाता है, परन्तु भक्तों की सूची में महर्षि दयानन्द जी का नाम न कोई लेता है और न ही कोई उनको आस्तिक समझता है बल्कि उनको सब नास्तिक ही समझते हैं। ऐसे लोग न ही ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को जानते हैं और न ही भक्ति के यथार्थ स्वरुप का उन्हें परिज्ञान है ।

ऋषि दयानन्द के धार्मिक तथा सामाजिक सुधार के कार्य में अधिक सक्रिय रहने तथा उनके राष्ट्रीय जागरण के प्रथम पुरोधा होने के कारण अनेक लोगों में यही धारणा बन गई है कि भारत की आध्यात्मिक चेतना को जगाने तथा भगवद् भक्ति के प्रसार में उनका योगदान अल्प है। ऐसा विचार उन लोगों का है जिन्होंने दयानन्द का सूक्ष्म रूप से अध्ययन नहीं किया। गहराई से देखें तो पता चलता है कि दयानन्द का गृहत्याग और संन्यास ग्रहण जिस विशिष्ट लक्ष्य को ध्यान में रखकर हुआ था, उसके पीछे अध्यात्म ज्ञान को प्राप्त करने की उनकी तीव्र ललक ही थी। शिवरात्रि-प्रसंग से उन्होंने सीखा कि निखिल विश्व ब्रह्माण्ड का नियंत्रण करने वाली सत्ता जड़ नहीं हो सकती। वह कल्याणकारी शिव कौन है तथा कैसा है जिसकी वंदना वेदों में अनेकत्र मिलती है? अपने घर में घटित हुए मृत्यु-प्रसंगों ने उन्हें जिन्दगी और मौत के रहस्य को जानने की प्रेरणा दी।

संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् उन्होंने अपने योग गुरुओं से उस **'राजयोग'** का प्रशिक्षण प्राप्त किया जो समाधि की सिद्धि पूर्वक परमात्मा का साक्षात्कार करवाता है। भावी जीवन में परम देव परमात्मा के प्रति उनका भक्तिभाव सदा रहा। अपने महान् कार्यों की पूर्ति में उन्होंने परमात्मा की सहायता की याचना की और आजीवन एक आस्तिक भक्त का जीवन बिताकर अपने आराध्य के प्रति **'स्वयं'** को अर्पण कर दिया। स्वामी जी की धारणा थी कि धर्म, समाज और राष्ट्र को समुन्नत करने का जो महद् अभियान उन्होंने चलाया है, उसमें परमात्मा की प्रेरणा तथा सहायता ही सर्वोपरि रही है।

वे परमात्मा के अनन्य उपासक थे। समर्पण भाव को लेकर जगन्नाक के सूत्रधार के सम्मुख आने वाले वे एक ऐसे विनम्र सेवक थे जिन्होंने अत्यन्त भाव प्रवण होकर अपने आराध्य देव से कहा था - **'आपका तो स्वभाव ही है कि अंगीकृत को कभी नहीं छोड़ते।'** शास्त्रार्थ समर में उतरने से पहले दयानन्द दीर्घकाल तक परमात्मा की उपासना करते थे मानो अपने आराध्य से सत्य पक्ष की विजय दिलाने की प्रार्थना करते हों। लोकहित के अपने सभी कार्यों और अनुष्ठानों में वे परमात्मा को अपना परम सहायक मानते थे।

भक्तिवाद का उदय और भक्ति सूत्रों की रचना षट् दर्शन शास्त्रों की शैली पर कालान्तर में नारद और शाण्डिल्य के नाम से भक्तिसूत्र रचे गए। इनमें सूत्र शैली में भक्ति तथा उसके आनुषंगिक प्रसंगों की विस्तृत मीमांसा प्रस्तुत की गई है। आचार्य शाण्डिल्य ने भक्ति को इस प्रकार परिभाषित किया है **'या परा अनुरक्तिः ईश्वरे सा भक्तिः।'** अर्थात् परमात्मा के प्रति पराकोटि की अनुरक्ति, प्रेम ही भक्ति है। इन ग्रन्थों में नवधा भक्ति का जो उल्लेख मिलता है उससे अनुमान होता है कि भक्तिसूत्रों की रचना उस युग में हुई थी जब पौराणिक मत का प्रचलन हो चुका था तथा जनता में प्रतिमा-पूजन, अवतारवाद आदि की धारणाएं चल पड़ी थीं। इन ग्रन्थों में ब्रज गोपिकाओं आदि के सन्दर्भ दिये गए हैं, वे इन्हें पुराणों के परवर्ती काल का होना बताते हैं।

ऋषि दयानन्द ने परमात्मा की भक्ति की और व्यक्ति का मनोनिवेश करने वाला एक ग्रन्थ लिखा था-**आर्याभिविनय**। उनका विचार था चारों वेद संहिताओं में प्रत्येक से न्यून से न्यून पचास मंत्रों को लेकर उनकी भगवद्भक्ति से ओतप्रोत भावपूर्ण व्याख्या की जाये। इस ग्रंथ के प्रथम तथा द्वितीय प्रकाश ऋग्वेद के 53 तथा यजुर्वेद के 55 मंत्र युक्त लिखे गए तथा छपे। अवशिष्ट साम तथा अथर्ववेद के विनय प्रधान मंत्रों की व्याख्या वे नहीं लिख सके। यहाँ व्याख्यात मंत्रों में परमात्मा की स्तुति है या प्रार्थना, इसका संकेत वे मन्त्रारम्भ में कर देते हैं।

ग्रन्थारम्भ के स्वरचित श्लोकों में दयानन्द ने परमात्मा की भावपूर्ण स्तुति की है :-

सर्वात्मा सच्चिदानन्दोऽनन्तो यो न्यायकृच्छुचिः।
भूयात्तमा सहायो नो दयालुः सर्वशक्तिमान्।

अर्थात् जो परमात्मा सबका आत्मा, सत्, चित, आनन्दस्वरूप, अनन्त, अजय, न्याय करने वाला, निर्मल, सदा पवित्र, दयालु सब सामर्थ्य वाला, हमारा इष्टदेव है, वह हमको सहाय नित्य

होवे। साथ ही इन श्लोकों में वे यह संकेत देते हैं कि समस्त लोगों के हित तथा परमात्मा के ज्ञान के लिए वे मूल मंत्रों के साथ-साथ उनका लोक-भाषा में व्याख्यान जन साधारण को बोध कराने के लिए दे रहे हैं। दयानन्द की सम्मति में जो ब्रह्म विमल, सुखकारक, पूर्णकाम, तृप्त, जगत् में व्याप्त है वही वेदों से प्राप्य है। जिसके मन में इस ब्रह्म की प्रकटता वा यथार्थ ज्ञान है, वही मनुष्य ईश्वर के आनन्द का भागी है और वही सदैव सबसे अधिक सुखी है। ऐसे मनुष्य को धन्य मानना चाहिए। इन प्रास्ताविक श्लोकों से हमें दयानन्द के भक्तिवाद को समझने में सहायता मिलती है।

आर्याभिविनय की रचना केवल ईश्वर-भक्ति में लोगों को नियोजन करने के लिए ही की गई हो, ऐसी बात नहीं है। दयानन्द मध्यकाल के अनेक भक्तों की भांति लोगों को भाग्यवाद तथा पुरुषार्थ हीनता का पाठ पढ़ाने वाले नहीं थे। वे आर्य जनों में पुरुषार्थ स्वदेश प्रेम तथा स्वातन्त्रय लिप्सा के भावों को देखने के इच्छुक थे। यही कारण है कि आर्याभिविनय में एक ओर प्रभुभक्ति तथा अपने आराध्य के प्रति समर्पण की भावना दिखाई पड़ती है तो साथ ही उस '**राजाधिराज परमात्मा**' से स्वराज्य तथा आर्यों, सत्पुरुषों के अखण्ड चक्रवर्ती साम्राज्य की याचना भी की गई है।

परमात्मा के प्रति दयानन्द की आनन्द प्रीति को देखना चाहें तो इस ग्रन्थ में सर्वप्रथम व्याख्यात ऋग्वेद के मन्त्र -'**शं नो मित्रःशं वरुणः**' की व्याख्या के आरम्भ में परमात्मा के प्रति किये गए सम्बोधनों की छटा को देखें। यहाँ न्यूनातिन्यून सत्ताईस सम्बोधनों से दयानन्द ने अपने आराध्य परमात्म-देव को सम्बोधित किया है। इनमें से अनेक सम्बोधनों में अनुप्रास प्रधान शब्दों का सौन्दर्य दर्शनीय है। तथा-विश्वविनोदक, विनयविधिप्रद, विश्वसविलासक तथा निर्मल, निरीह, निरामय, निरुपद्रव आदि। एक ओर यदि परमात्मा को '**सज्जन सुखद**' कहा तो साथ ही उसे '**दुष्टसुताड़न**' कहना भी वे नहीं भूले। दयानन्द की दृष्टि में परमात्मा चतुर्विध पुरुषार्थ के प्रदाता हैं-वे यदि धर्म सुप्रापक हैं तो अर्थ-सुसाधक तथा सुकाम वर्द्धक भी हैं। मोक्षप्रदाता तो वे हैं ही-यदि वे '**राज्य विधायक**' हैं तो '**शत्रु विनाशक**' भी हैं। वस्तुतः इस ग्रन्थ को लिखकर दयानन्द ने भारत के भक्तिसिद्धान्तों में एक नूतन क्रांति की थी, अतः दयानन्द के भक्तिवाद का तात्त्विक अध्ययन अपेक्षित है।

इस ग्रन्थ के अन्य मंत्रों के व्याख्यानों में उन्होंने परमात्मा के लिए जो सम्बोधन सूचक शब्द लिखे हैं, वे भी व्यंजनापूर्ण हैं।

जब वे परमात्मा को '**महाराजाधिराज परमेश्वर**' कहकर सम्बोधित करते हैं तो उनकी प्रार्थना होती है-'**हमको साम्राज्याधिकारी सद्यः कीजिए।**' उनकी विनय है कि हम सुनीतियुक्त हों जिससे कि हमारा स्वराज्य अत्यन्त बढ़े।

प्रार्थना सं. 17 '**वयं जयेम त्वया युजा**' (1.102.4) मन्त्र की व्याख्या के आरम्भ में उन्होंने परमात्मा को 'महाधनेश्वर' यमघवन् तथा 'महाराजाधिराजेश्वर' कहकर पुकारा तथा उनसे चक्रवर्ती राज्य और साम्राज्यरूपी धन को प्राप्त कराने की प्रार्थना की। यह ईश्वरभक्त दयानन्द ही है जो परमात्मा से आर्यों के अखण्ड राज्य के लिए विनय करता है कि '**अन्य देशवासी**' राज हमारे देश में कभी न हों तथा हम लोग पराधीन कभी न हों।' यजुर्वेद के मंत्र (37.14) '**इषे पिन्वस्व**' की व्याख्या में सामान्यतः भक्त अपने आराध्य से सुख, सौभाग्य, आरोग्य, धन-धान्य, कीर्ति ऐश्वर्य आदि की याचना करता है।

दयानन्द अपने परमात्मा से देश के लिए स्वराज्य तथा शिष्टजनों, आर्यों के साम्राज्य की याचना के प्रति जो सम्बोधन शब्द प्रयुक्त किये हैं वे भी विशिष्ट अर्थ लिये हैं। शतक्रतो, अनन्त कार्येश्वर, महाराजाधिराज परमेश्वर सौख्य-प्रदेश्वर, सर्वविद्यामय आदि। वस्तुतः अनन्त गुणों वाले परमात्मा के सम्बोधन भी अनन्त ही होंगे।

परमात्मा की भक्ति दिखाने की वस्तु नहीं है। मध्यकाल में मूर्तिपूजा, नाम जप, तिलक, कण्ठी-छाप आदि साम्प्रदायिक प्रतीकों के धारण को भक्ति का साधन माना गया था। दयानन्द की सम्मति में परमात्मा के विविध गुणों के वाचक शब्दों के उल्लेखपूर्वक उस परम सत्ता को नमन करना ही उसकी भक्ति का उत्कृष्ट रूप है। यदि हम दयानन्द जी के ग्रंथों को पढेंगे तो अवश्य यह ज्ञान हो जायेगा कि दयानन्द जी जैसा ईश्वर भक्त कोई दूसरा मिलना कठिन ही है।

साभार : आर्य समाज

आर्य समाज ने बचाया अफ्रीका का हिन्दू समुदाय

विनय आर्य

भारतीय उपमहाद्वीप से निकली आर्य समाज की वैदिक विचाधारा देश-विदेश जहाँ भी गयी अपने साथ लेकर गयी अपनी वेदवाणी, अपनी भाषा और सत्य सनातन वैदिक धर्म की वह जीवंत संस्कृति जो समस्त मानव जाति पर सहिष्णुता के साथ उपकार का कार्य करती है।

देखा जाये तो महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षाएं भारतीय भूभाग से निकलकर दक्षिण अफ्रीका में 20वीं सदी के आरम्भ में पहुँचीं। दक्षिण अफ्रीका में जाने वाले पहले आर्य समाजी भाई परमानंद सन् 1905 में पहुंचे थे। अपने चार महीने के प्रवास के दौरान, उन्होंने जोहान्सबर्ग, प्रिटोरिया और केपटॉउन की यात्रा की थी। वे अंग्रेजी और हिन्दी दोनों के प्रखर वक्ता थे। उन्होंने हिन्दू संस्कृति, धर्म, भारतीय सभ्यता, ईश्वर में विश्वास, अपने समारोह, मातृभाषा हिन्दी और शिक्षा के महत्त्व पर भाषण दिए। उन्होंने अपने त्यौहारों के महत्त्व पर जोर दिया और तब से वहाँ दीपावली को हिन्दुओं के त्यौहार के रूप में पहचाना जाने लगा। उन्होंने भारतीयों के बीच हिन्दू धर्म को मजबूत करने के लिए जमीनी आर्य समाज समितियों की स्थापना की और विभिन्न हिन्दू समूहों को एक मंच पर लाने का कार्य करने के साथ भारतीयों को अपनी संस्कृति एवं विरासत पर गर्व करने की शिक्षा दी तथा सामाजिक सुधार एवं शिक्षा के प्रसार का कार्य किया।

असल में वर्ष 1908 से पहले अफ्रीका में हिन्दू समुदाय के लोगों को दीपावली मनाने का अधिकार नहीं था। आप लोग सुनकर आश्चर्य करेंगे कि उस समय अफ्रीका के हिन्दू समुदाय का सबसे बड़े रूप में मनाया जाने वाला त्यौहार ताजिया था। मुहर्रम के दौरान हिन्दू समुदाय ताजिये का जुलूस निकाला करते थे। यह देख वहां पहुंचे आर्य समाज के विद्वान् स्वामी शंकरानन्द को बड़ी निराशा हुई हृदय दुःख से भर आया कि अपने उत्सवों को भूल आज यहाँ हिन्दुओं का सबसे बड़ा उत्सव ताजिया बन चुका है। स्वामी जी ने लोगों की चेतना जगाने का निर्णय लिया और अप्रैल 1910 में, स्वामीजी ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र के जन्म का जश्न मनाने के लिए डरबन की सड़कों पर एक रथ जुलूस का आयोजन किया। भीड़ उमड़ी स्वामी जी ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए लोगों को अपने उत्सवों के सही महत्त्व को समझाया।

स्वामी जी की मेहनत रंग लाई और परिणामस्वरूप दीपावली को हिन्दुओं के मुख्य त्यौहार के रूप में स्थापित किया गया। हिन्दुओं से अपने वैदिक धर्म पर गर्व करने का आग्रह किया और धार्मिक व्याख्यान, संस्कार और भारतीय स्थानीय भाषाओं के अध्ययन पर जोर दिया। वे श्रीराम के जन्म और हिन्दू कैलेंडर में योगिराज श्रीकृष्ण की महत्वपूर्ण तिथियों से जुड़े उत्सवों के साथ वैदिक संस्कृति को पुनः स्थापित करने में सफल रहे। साथ ही उन्होंने डरबन और पीटर्सबर्ग में वेद धर्म सभा की स्थापना भी की। उन्होंने गाय के लिए हिन्दुओं के मन में गहरे सम्मान पर प्रकाश डाला और गो-हत्या को रोकने के लिए लड़ाई को लड़ा। स्वामी ने हिन्दू चेतना और उद्देश्य की एकता को बढ़ाने में बड़ी जीत हासिल की।

लोगों को राह मिली, धीरे-धीरे स्थानीय कार्यकर्ता पैदा होने लगे इसी में एक आर्य कार्यकर्ता थे पंडित भवानी दयाल, जो 1912 में बीस वर्ष की उम्र में भारत से लौटे थे। उन्होंने वैदिक धर्म का प्रचार किया और दक्षिण अफ्रीका में हिन्दी के प्रचार की शुरुआत की। वे और उनकी पत्नी, महात्मा गांधी के सत्याग्रह में भी शामिल थे और दोनों अंगेजों की कैद में थे, किन्तु 1916 में रिहा होते ही उन्होंने एक हिन्दी साहित्यिक सम्मेलन का आयोजन किया और अफ्रीका में दो स्थानीय हिन्दी भाषी समाचार पत्रों का प्रकाशन कराया।

एक अन्य प्रचारक, **स्वामी मंगलानंद पुरी**, 1913 में नाताल ब्राजील गए। उन्होंने आर्य युवक सभा के तहत व्याख्यान दिए और अपने प्रवास के दौरान, उन्होंने आर्य समाज में शामिल होने वाले कई युवा पुरुषों को आकर्षित किया। 1920 के दशक की शुरुआत तक अफ्रीकी देशों में कई आर्य समाज स्थापित करा दिए गए थे।

इसके बाद तो मानो जैसे अफ्रीकी भूमि पर आर्य समाज की लहर चल पड़ी थी। उसी दौरान पंडित पूर्णानंद द्वारा युगांडा में आर्य समाज द्वारा एक बड़ी भव्य इमारत का निर्माण किया गया। डी ए वी कॉलेज के प्रोफेसर रलामम होशियारपुर पंजाब से 1931 में अफ्रीका पहुंचे और वैदिक धर्म पर व्याख्यान दिए। इसके बाद 1934 में आर्य विद्वान् पंडित आनंद प्रियजी, जो भारत के बड़ौदा के आर्य कन्या महाविद्यालय से लड़कियों के गाइड के एक दल के साथ पहुंचे, और शारीरिक शक्ति का प्रदर्शन किया, राष्ट्रीय और

...शेष पृष्ठ 15 पर

आखिर अंधविश्वास को कब मिलेगा मोक्ष?

दिल्ली के बुराड़ी में एक ही परिवार के सभी 11 सदस्यों की मौत पर से धीरे-धीरे अभी जितना पर्दा उठ रहा है उतने ही सवाल खड़े हो रहे हैं। कहा जा रहा है इस परिवार की किसी से कोई दुश्मनी नहीं थी और ये हत्या के बजाय आत्महत्या का मामला है। घर के लोग धार्मिक प्रवृत्ति के थे। जिस तरीके से उन्होंने खुदकुशी की है। उस पर धार्मिक रीतियों के बारे में लिखा है। मोक्ष के बारे में लिखा है कि आंखें बंद करेंगे, हांथ बांध लेंगे तो मोक्ष की प्राप्ति होगी। ये वे बातें हैं जो इशारा कर रही हैं कि परिवार ने अंधविश्वास में फंसकर ये खौफनाक कदम उठाया।

दरअसल मोक्ष कोई वस्तु नहीं है, जिसे पाया जा सके। वह पाने का कोई विषय नहीं है। जब मन में कोई इच्छा न हो और तो और मोक्ष की भी नहीं, तब जो होता है, उसका नाम मोक्ष है। मोक्ष है कुंठाओं का त्याग है वैदिक धर्म में मोक्ष को योग से समाधि की ओर कहा गया है। यानि के मोक्ष एक ऐसी दशा है जिसे मनोदशा नहीं कह सकते।

लोगों को यह समझाने के बजाय उल्टा इस मामले में मीडिया के सभी प्लेटफार्मों से इस बात को बार-बार दोहराया जा रहा है कि मृतक परिवार धार्मिक था। इसी कारण उसने मौत को गले लगाया। जबकि सही मायने में देखें तो ये कथित बौद्धिक लोगों की अज्ञानता है, क्योंकि कहीं से भी यह मामला धार्मिकता से जुड़ा नहीं है ये पागलपन, अंधविश्वास और पाखंड से जुड़ा मामला है। जहाँ मीडिया को इस परिवार के पाखंडता से जुड़े होने के सवाल उजागर करने थे, वहां इसमें धार्मिकता पर निशाना साधा जा रहा है ताकि धार्मिकता की हत्या कर, पाखंड को और अधिक बल दिया जा सके। भला समाज में परिवार धार्मिक नहीं तो क्या राक्षसी प्रवृत्ति के होने चाहिए? कहा जा रहा है बुराड़ी में मृतकों के परिवार से पुलिस को जो रजिस्टर मिले हैं, उनमें अलौकिक शक्तियों, मोक्ष के लिए मौत ही एक द्वार व आत्मा का अध्यात्म से रिश्ता जैसी अजीबोगरीब बातें लिखी बताई जा रही हैं।

असल में आज हर किसी को सुखसमृद्धि चाहिए और

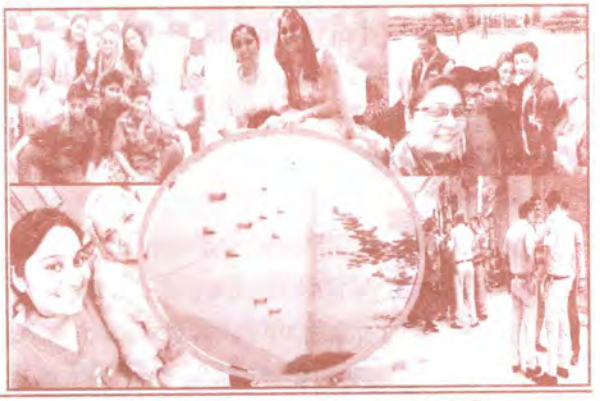

आर्यसमाज ने बचाया ...पृष्ठ 14 का शेष

धार्मिक गीत गाए और उनके बलशाली प्रभावशाली भाषणों के माध्यम से वैदिक धर्म की शिक्षाओं को फैलाया। 1937 में प्रोफेसर यशपाल ने योग की शक्तियों का प्रदर्शन किया। पंडित ऋषिराम ने 1937 और 1945 में दक्षिण अफ्रीका का दौरा किया और वेदों, उपनिषद् और गीता के आधार पर शिक्षाएं दीं।

उस समय युगांडा आर्य समाज पूर्वी अफ्रीका में सबसे सक्रिय समाज था। आर्य समाज के कार्यों से प्रभावित होकर युगांडा के कंपाला में कालिदास मेहता जी ने एक विशाल भव्य इमारत आर्य विद्यालय के रूप में बनवाकर भेंट कर दी, लेकिन आर्य समाज की इन महान् गतिविधियों को 70 के दशक में युगान्डा के सैनिक **तानशाह इदी अमीन** की मजहबी नजर ने कुचलने का कार्य किया। उसने गद्दी पर बैठते ही भारतीय मूल के सभी लोगों को युगांडा छोड़ने और आर्य समाज का काम समाप्त कर देने का आदेश दिया। एशियाई मूल के हजारों लोगों को, जो इस्लाम से भिन्न मत रखते थे, जिनमें भारत का एक बहुत बड़ा हिन्दू समुदाय भी था देश से निकाल दिया गया, उनकी संपत्ति जब्त कर ली और अपने दोस्तों में बाँट दी जब विश्व समुदाय ने इस घटना को उठाया तो समस्त मुस्लिम देशों ने एक स्वर में कहा था कि इस्लाम के बीच सिर्फ इस्लाम को मानने वाले ही रह सकते हैं।

समय गुजरा लगभग एक दशक लम्बी चली इदी अमीन की मजहबी सत्ता के विनाश के बाद कुछ साल पहले फिर से आर्य समाज का कार्य शुरू हो गया है। आज वहां आर्य समाज अपने पूरे वेग से कार्य कर रहा है वहां के आर्य समाजों आर्य शिक्षण संस्थानों पर लहराती **'ओ३म्'** ध्वज पताका मन में आर्य समाज के प्रति अथाह गर्व की भावना भर देती है कि आर्य समाज के उपकार से केवल भारतीय उपमहाद्वीप ही ऋणी नहीं हैं बल्कि अफ्रीका में बसे हिन्दुओं पर भी आर्य समाज का कितना बड़ा उपकार है।

- विनय आर्य,
उपमंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

अंधविश्वास बेहद सरल साधनों से सुखसमृद्धि की पूरी गारंटी देता है। यह सब पाने के लिए धर्मगुरु, कथावाचक, पंडे-पुरोहित भी खुशहाल जीवन के टोटके बताते हैं। इसके अलावा धर्म के नाम पर हर मुराद पूरी करने के नुस्खे बताने वाली, कथा-किस्सों से भरपूर मसाले वाली पाखंड की पुस्तकों से भी बाजार भरे पड़े हैं। जो सुख-सौभाग्य, संपत्ति, मोक्ष, सुरक्षा आदि प्रदान करने की पूरी गारंटी देती हैं। शायद इसी गारंटी से प्रेरित हो कर इस परिवार ने मोक्ष की कल्पना की हो ?क्योंकि इन पुस्तकों के अध्यायों में देवताओं द्वारा अनूठे कारनामे, कहीं देवी द्वारा असुरों का संहार या देवियों की अर्चना की गई है।

जब देवी एक मनुष्य की तरह ही लड़ती है तो झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने भी तो शत्रुओं से युद्ध किया था और जिसका प्रमाण भी पाया जाता है लेकिन लक्ष्मीबाई के नाम का कोई व्रत, कोई पूजा नहीं बनी। इसी तरह देश व धर्म के लिए अनेकों क्रांतिकारियों ने बलिदान दिया उनके नाम पर कोई व्रत नहीं है क्यों ? क्योंकि ये लोग काल्पनिक देवी-देवता की भीड़ खड़ी किये हुए है इसलिए इन्हें असली जीती जागती देवियों से भय है। उनका तो रेप कर रहे हैं।

हाल में पकड़े गये शनिधाम वाले बाबा दाती महाराज पीड़िता के जिस्म के हर हिस्से को नोंचता था। वह उसे चरण सेवा कहा करता था। पीड़िता मीडिया के सामने बता रही थी कि बाबा कहता था! तुम्हें मोक्ष प्राप्त होगा, यह भी सेवा ही है, तुम बाबा की हो और बाबा तुम्हारे, इससे क्या यही समझें कि अब ये लोग रेप से भी मोक्ष की गारंटी दे रहे हैं ?

आज अनेक कथित बाबाओं, पंडितों ने लोगों के मन में भय पैदा कर रखा है। इसके चलते ही ऐसे अंधविश्वासों का बाजार फलता-फूलता है और पाखंड की पुस्तकें बिकती हैं। नहीं तो, इन्हें पूछने वाला है ही कौन ? इसमें सभी धर्मों, मतों और पन्थों के कथित धर्म गुरु शामिल हैं। ये सब अपने आपको ईश्वर के दूत समझते हैं। अंधविश्वास पाखंड फैलाने से इन धर्म गुरुओं की रोजी-रोटी चलती रहती है। जब आम व्यक्ति थोड़ा भी परेशान होता है वह इन गुरुजी की शरण में चला जाता है। बस यही से इनकी बल्ले-बल्ले हो जाती है और देखिये इनके पास दु:खी और परेशान लोग ही जाते हैं जिनसे ये लोग अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए उपाय के नाम पर धन अर्जित करते रहते हैं। भला ये क्यों किसी की सुखसमृद्धि की कामना करेंगे ? ये तो चाहते हैं लोग परेशान रहें, दुखी रहें, पीड़ित रहे, हाँ अगर

भूल से भी कोई सुखी मनुष्य इनके करीब चला भी जाये तो ये लोग उसके भविष्य में अमंगल होने की झूठी कहानी गढ़कर उसे भी दुखी कर देते हैं।

आम लोगों को डराने के लिए इनके पास कुछ प्रसिद्ध वाक्य होते है 'आप पर शनि की छाया है, चुडेलों की नजर है, भूतों ने आपको जकड रखा है। योगनियों और शमशान के प्रेत आपके काम में प्रगति नहीं करने दे रहे, देवताओं का प्रकोप है, देवियों का गुस्सा है और लोग इन धर्म के ठेकेदारों की मूर्खतापूर्ण बातों में आकर पाखंड में फंसकर पूजा-पाठ करवा कर अपनी पूरी जिंदगी तबाह कर देते हैं। शनि के लिए शनि दान, मंगल के लिए मगल दान, काली के लिए बलि, श्मशान के प्रेतों के लिए मुर्गा और न जाने क्या-क्या ? हर रोज भारत में लाखों मासूम जानवर इन्ही धर्म के ठेकदारों के पेट की भूख शांत करने के लिए भगवानों के नाम पर काटे जाते हैं।

शायद इसी छल से इन्होंने धर्म के नाम अपने साम्राज्य खड़े कर लिए हैं। लोगों की भूख, रोजगार, दु:ख दर्द की चिंता, किसी के स्वास्थ और किसी नागरिक की शिक्षा की फिक्र इन्हें कतई नहीं है। बस इनका साम्राज्य बड़ा हो देश में चिन्तनशील, विवेकी और धर्म की सच्ची व्याख्या करने वाले लोग समाप्त हों, बस हर समय ये लोग यही कामना करते हैं ताकि इनके बहकावे में लोग आते रहें और बुराड़ी की तरह के हादसे होते रहें।

आज जबकि लोगों को इन अंधविश्वासों से बाहर आने की आवश्यकता है जब तक हम धर्म के नाम पर भयभीत रहेंगे तब तक धर्म के ठेकेदार लोगों को लुटते रहेंगे। यह एक अंधविश्वास का कुआं ही तो हुआ जिसमें गिराने के लिए सीधे भोले लोगों को ही निशाना बनाया जा रहा है। खुद भूखे-प्यासे रह कर देवी-देवताओं को प्रसन्न करने से क्या होगा ? आहार त्याग कर, अपने परिवार की बलि दे कर भला मोक्ष मिलेगा क्या ? इतनी बात तो स्वयं समझने की थी पर दु:खद काल है कि यह इतनी सी बात भी आज लोगों को समझानी पड़ रही है। **साभार : आर्यसमाज**

हमारे पूर्वज मूर्ख थे या पाश्चात्यों के पूर्वज?

हमारे प्राचीन ऋषि-महर्षि लोग समाधिस्थ होकर अनेक सूक्ष्म वस्तुओं को भी जान लेते थे जो कि आज कल के भौतिक वैज्ञानिक, बड़े-बड़े सूक्ष्म यन्त्रों के माध्यम से भी जान नहीं पाते । हमारे ऋषि-मुनियों की जो योग्यता थी विज्ञान के क्षेत्र में हो या अध्यात्म के क्षेत्र में हो, आजकल के वैज्ञानिक उनके सामने कुछ भी नहीं हैं बल्कि अध्यात्म के क्षेत्र में तो शून्य ही हैं।

कुछ लोग मानते होंगे कि हमारे पूर्वज मूर्ख थे, उनको कुछ नहीं आता था, यहाँ तक कि भोजन पकाना नहीं आता था अत: वे लोग मांस खाया करते थे इत्यादि। वास्तव में देखा जाये तो संभावना है कि यह सब इतिहास पाश्चात्य लोगों के साथ घटित हुई हो और उन्होंने हमारे पूर्वजों के ऊपर मढ़ दिया और अपने को विद्वान् घोषित कर दिया। हमारे पूर्वज मूर्ख नहीं थे और न ही बन्दर थे, यह सब पाश्चात्य मूर्खों की ही मिथ्या परिकल्पना मात्र है ।

ऋषि लोग शरीर में होने वाली सूक्ष्म प्रक्रियाओं को भी जान लेते थे जैसे कि बालक गर्भ में किस प्रकार रहता है और किन-किन क्रियाओं को करते रहता है, कितने समय में गर्भस्थ शिशु कितना विकास को प्राप्त होता जाता है? ठीक ऐसा ही जो हम सब मनुष्य अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए अत्यन्त सरलता से शब्दों का उच्चारण कर लेते हैं वे शब्द किस प्रकार अन्दर से उत्पन्न होते हैं और किस पद्धति से बाहर प्रकट रूप में आते हैं? यह सब हमारे लिए बुद्धिगम्य ही नहीं है परन्तु ऋषि-मुनियों को यह सहजता से ही अंत:करण से अनुभूत हो जाता था और वे इस शब्दोच्चारण की सूक्ष्म विद्या को 4-5 वर्ष अल्पायु के बालक को भी सिखा दिया करते थे। वर्णोच्चारण शिक्षा पुस्तक में बताया गया है कि :-

आत्मा बुद्ध्या समेत्यर्थान् मनो युङ्क्ते विवक्षया।
मन: कायाग्निमाहन्ति स प्रेरयति मारुतम्।।
मारुतस्तूरसि चरन् मन्दं जनयति स्वरम्।।

अर्थात् सर्व प्रथम आत्मा बुद्धि के साथ संयुक्त होकर कुछ कहने की इच्छा से मन को युक्त करता है, पुन: मन जठराग्नि को प्रताड़ित करता है, फिर वह जठराग्नि वायु को प्रेरित करता है। उसके पश्चात् वह वायु हृदय प्रदेश में गति करता हुआ धीरे-धीरे स्वरों को अर्थात् वर्णों को उत्पन्न करता है जिससे फिर सामने वाले को सुनाई देता है।

चत्वारि वाक् परिमिता पदानि तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिण: ।
गुहा त्रीणि निहिता नेङ्गयन्ति तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति।।
(ऋग्वेद 1.164.45)

ऋग्वेद और अथर्ववेद में कहा गया है कि वाणी चार प्रकार के भेदों वाली है । उनके नाम क्रमश: परा, पश्यन्ति, मध्यमा और वैखरी हैं । इन भेदों को तत्त्वज्ञ या ब्रह्मज्ञ ही जानने में समर्थ होते हैं। इनमें से तीन भेद बुद्धिरूपी गुफा में ही विद्यमान हैं और इनमें किसी भी प्रकार की स्थूलरूप शारीरिक चेष्टा नहीं होती है अत: ये तीनों सुनने योग्य नहीं होती है। केवल चतुर्थ वैखरी वाणी को ही मनुष्य लोग अपने व्यवहार में प्रयोग कर पाते हैं अथवा उच्चारण के पश्चात् सुन पाते हैं ।

परावाणी :- परा वाणी शुद्ध ज्ञानरूप है और सर्वत्र व्यापक रहने वाली है। यह शान्त समुद्र के तुल्य निश्चल और निष्क्रिय है। यह अक्षय है, विनाशरहित है। इस अवस्था में यह अपने शुद्ध शब्दब्रह्म के रूप में विद्यमान रहती है। यह वाणी की अव्यक्त एवं सूक्ष्मतम अवस्था मानी जाती है। योगी ही इसके शुद्ध स्वरूप का साक्षात्कार कर पाते हैं ।

पश्यन्ति वाणी :- जब किसी विचार या भाव को प्रकट करने की इच्छा होती है, तब पश्यन्ति वाणी का कार्य प्रारम्भ होता है। शान्त समुद्र में छोटी तरंग के समान विचाररूपी तरंग वाक् तत्त्व में प्रकट होते हैं। इन विचारों को व्यक्त करने की भावना का उदय होना और शान्त समुद्र में थोड़ी हलचल का होना, तरंगे उठना और विचारों की अभिव्यक्ति की प्रक्रिया का प्रारम्भ होना पश्यन्ति अवस्था है। यह द्वितीय अवस्था है जो कि मस्तिष्क तक सीमित है, अत: अव्यक्त है। योगी ही विचारों के उदय होने की प्रक्रिया को देख सकते हैं।

मध्यमा वाणी :- यह तृतीय अवस्था है। इसमें शरीर यंत्र में हलचल प्रारंभ हो जाती है। नाभि से प्राणशक्ति ऊपर उठती है और सर से टकराकर स्वरयंत्र तक मुख में पहुँच जाती है। केवल वर्णों के उच्चारण का कार्य ही शेष रह जाता है। यह उच्चारण से पूर्व की अवस्था है, अत: इसे मध्यमा या मध्यगत वाणी कहते हैं ।

वैखरी वाणी :- यह वाणी की चतुर्थ अवस्था है। इसमें वर्णों का कंठ, तालु आदि स्थानों से उच्चारण प्रारंभ हो जाता है। अब विचार या भाव अव्यक्त या गुप्त न रहकर प्रकट हो जाते हैं। यह वैखरी वाणी ही जन साधारण के व्यवहार में आती है।

ये सब सूक्ष्म विद्याएँ हमारे ऋषि-मुनियों की गवेषणा और खोज का ही प्रतिफल है, उन्होंने तो ऐसे अनगिनत सूक्ष्म वैज्ञानिक तथ्यों की खोज की है, जिनके इतिहास को ही बदलकर रख दिया गया। ऋषियों की गवेषणा में से महर्षि भरद्वाज मुनि प्रणीत

...शेष पृष्ठ 18 पर

क्रांतिकारी आंदोलन का प्रथम शहीद : खुदीराम बोस

महान क्रान्तिकारी खुदीराम बोस का **जन्म 3 दिसंबर, 1889 ई. को बंगाल** में मिदनापुर जिले के हबीबपुर गाँव में त्रैलोक्य नाथ बोस के यहाँ हुआ था। खुदीराम बोस जब बहुत छोटे थे, तभी उनके माता-पिता का निधन हो गया था। उनकी बड़ी बहन ने उनका लालन-पालन किया था। **सन् 1905** में बंगाल का विभाजन होने के बाद खुदीराम बोस देश के मुक्ति आंदोलन में कूद पड़े थे। सत्येन बोस के नेतृत्व में खुदीराम बोस ने अपना क्रांतिकारी जीवन शुरू किया था।

खुदीराम बोस राजनीतिक गतिविधियों में स्कूल के दिनों से ही भाग लेने लगे थे। उन दिनों अंग्रेजों से छोटे-छोटे हिन्दुस्तानी स्कूली बच्चे भी नफरत किया करते थे। वे जलसे-जलूसों में शामिल होते थे तथा अंग्रेजी साम्राज्यवाद के खिलाफ नारे लगाते थे। बोस को गुलामी की बेड़ियों से जकड़ी भारत माता को आजाद कराने की ऐसी लगन लगी कि उन्होंने नौवीं कक्षा के बाद ही पढ़ाई छोड़ दी और सिर पर कफन बांधकर जंग-ए-आजादी में कूद पड़े।

वे रिवोल्यूशनरी पार्टी के सदस्य बने और **वंदेमातरम** पम्पलेट वितरित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1905 में बंगाल विभाजन के विरोध में चलाए गए आंदोलन में भी उन्होंने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। पुलिस ने 28 फरवरी, सन् 1906 ई. को सोनार बंगला नामक एक इश्तहार बाँटते हुए बोस को दबोच लिया, लेकिन बोस मजबूत थे। पुलिस की बोस ने पिटाई की और उसके शिकंजे से भागने में सफल रहे।

16 मई, सन् 1906 को एक बार फिर पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया, लेकिन उनकी आयु कम होने के कारण उन्हें चेतावनी देकर छोड़ दिया गया था। 6 दिसम्बर, 1907 को बंगाल के नारायणगढ़ रेलवे स्टेशन पर किए गए बम विस्फोट की घटना में भी बोस शामिल थे। उन्होंने अंग्रेजी चीजों के बहिष्कार आन्दोलन में बढ़चढ़ कर भाग लिया।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के आरंभिक चरण में कई क्रांतिकारी ऐसे थे जिन्होंने ब्रिटिश राज के विरुद्ध आवाज उठाई। खुदीराम बोस भारत की स्वतंत्रता के संघर्ष के इतिहास में संभवतया सबसे कम उम्र के क्रांतिकारी थे, जो भारत माँ के सपूत कहे जा सकते हैं। बंगाल के विभाजन के बाद दुखी होकर खुदीराम बोस ने स्वतंत्रता के संघर्ष में अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों से एक मशाल जलाई। उन्होंने ब्रिटिश राज के बीच डर फैलाने के लिए एक ब्रिटिश अधिकारी के वाहन पर बम डाल दिया।

उन दिनों कोलकाता का चीफ प्रेंसीडेसी मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड था। वह बहुत सख्त और क्रूर अधिकारी था। वह अधिकारी देश भक्तों, विशेषकर क्रांतिकारियों को बहुत तंग करता था। उन पर वह कई तरह के अत्याचार करता। क्रान्तिकारियों ने उसे मार डालने की ठान ली थी। युगान्तर क्रांतिकारी दल के नेता वीरेन्द्र कुमार घोष ने घोषणा की कि

हमारे पूर्वज...पृष्ठ 17 का शेष

बृहद्विमानशास्त्र आज भी उपलब्ध है। ऐसे अनेकों ऋषि-महर्षि हुए हैं जिन्होंने समाधिस्थ होकर सीधे-सीधे ईश्वर से शुद्ध ज्ञान प्राप्त किया करते थे और वह ज्ञान मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए होता था। उन दिव्य पुण्यात्माओं, ऋषि-मुनियों के सामने तो इन वैज्ञानिकों की कुछ भी योग्यता नहीं है। वर्तमान के वैज्ञानिक तो ऐसे हैं जैसे कि :-

अविद्यायामन्तरे विद्यमानाः स्वयं धीराः पण्डितंमन्यमानाः।
दन्द्रम्यमाणाः परियन्ति मूढा अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः।।

अर्थात् कुछ लोग स्वयं को धीर पण्डित मानने वाले हैं परन्तु वे अविद्या के अन्दर गोते लगाते रहते हैं ऐसे मूर्ख लोगों के पीछे चलने वालों की स्थिति भी वैसी ही होती है जैसी अंधों के पीछे चलने वाले अंधों की होती है, अतः हे मनुष्यों! सावधान हो जाओ! नहीं तो दुर्गति सुनिश्चित है। हमारे पूर्वजों के ग्रन्थों को पढ़ के तो देखें फिर बड़े-बड़े साइंटिस्ट और साइंस के छात्रों की बुद्धि भी अवरुद्ध हो जाएगी। ऋषियों के प्रश्नों का इनके पास कोई उत्तर नहीं होता।

किंग्सफोर्ड को मुजफ्फरपुर में ही मारा जाएगा। इस काम के लिए **खुदीराम बोस** तथा **प्रफुल्ल चाकी** को चुना गया।

ये दोनों क्रांतिकारी बहुत सूझबूझ वाले थे। इनकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। देश भक्तों को तंग करने वालों को मार डालने का काम उन्हें सौंपा गया था। एक दिन वे दोनों मुजफ्फरपुर पहुँच गए। वहीं एक धर्मशाला में वे आठ दिन रहे। इस दौरान उन्होंने किंग्सफोर्ड की दिनचर्या तथा गतिविधियों पर पूरी नजर रखी। उनके बंगले के पास ही क्लब था। अंग्रेजी अधिकारी और उनके परिवार अक्सर सायंकाल वहाँ जाते थे।

भारत माँ का वीर सपूत खुदीराम बोस

30 अप्रैल, 1908 की शाम किंग्स फोर्ड और उसकी पत्नी क्लब में पहुँचे। रात्रि के साढ़े आठ बजे मिसेज कैनेडी और उसकी बेटी अपनी बग्घी में बैठकर क्लब से घर की तरफ आ रहे थे। उनकी बग्घी का रंग लाल था और वह बिल्कुल किंग्सफोर्ड की बग्घी से मिलती-जुलती थी। खुदीराम बोस तथा उसके साथी ने किंग्सफोर्ड की बग्घी समझकर उस पर बम फेंक दिया। देखते ही देखते बग्घी के परखचे उड़ गए। उसमें सवार माँ-बेटी दोनों की मौत हो गई। क्रांतिकारी इस विश्वास से भाग निकले कि किंग्सफोर्ड को मारने में वे सफल हो गए है।

खुदीराम बोस और घोष 25 मील भागने के बाद एक रेलवे स्टेशन पर पहुँचे। खुदीराम बोस पर पुलिस को इस बम कांड का संदेह हो गया और अंग्रेज पुलिस उनके पीछे लगी और वैनी रेलवे स्टेशन पर उन्हें घेर लिया। अपने को पुलिस से घिरा देख प्रफुल्ल चंद ने खुद को गोली मारकर शहादत दे दी पर खुदीराम पकड़े गए। उनके मन में तनिक भी भय की भावना नहीं थी। खुदीराम बोस को जेल में डाल दिया गया और उन पर हत्या का मुकदमा चला। अपने बयान में स्वीकार किया कि उन्होंने तो किंग्सफोर्ड को मारने का प्रयास किया था, लेकिन उसे इस बात पर बहुत अफसोस है कि निर्दोष कैनेडी तथा उनकी बेटी गलती से मारे गए।

मुकदमा केवल पाँच दिन चला। 8 जून, 1908 को उन्हें अदालत में पेश किया गया और 13 जून को उन्हें प्राण दण्ड की सजा सुनाई गई। इतना संगीन मुकदमा और केवल पाँच दिन में समाप्त। यह बात न्याय के इतिहास में एक मजाक बना रहेगा। 11 अगस्त, 1908 को इस वीर क्रांतिकारी को फाँसी पर चढा दिया गया। उन्होंने अपना जीवन देश की आजादी के लिए न्यौछावर कर दिया।

मुजफ्फरपुर जेल में जिस मजिस्ट्रेट ने उन्हें फाँसी पर लटकाने का आदेश सुनाया था, उसने बाद में बताया कि खुदीराम बोस एक शेर के बच्चे की तरह निर्भीक होकर फाँसी के तख्ते की ओर बढ़ा था। जब खुदीराम शहीद हुए थे तब उनकी आयु 19 वर्ष थी। शहादत के बाद खुदीराम इतने लोकप्रिय हो गए कि बंगाल के जुलाहे उनके नाम की एक खास किस्म की धोती बुनने लगे। इनकी शहादत से समूचे देश में देशभक्ति की लहर उमड़ पड़ी थी। इनके साहसिक योगदान को अमर करने के लिए गीत रचे गए और इनका बलिदान लोकगीतों के रूप में मुखरित हुआ। इनके सम्मान में भावपूर्ण गीतों की रचना हुई जिन्हें बंगाल के लोक गायक आज भी गाते हैं।

इतिहासकार शिरोल के अनुसार- बंगाल के राष्ट्रवादियों के लिए वह शहीद और अधिक अनुकरणीय हो गया। विद्यार्थियों तथा अन्य लोगों ने शोक मनाया। स्कूल-कॉलेज बंद रहे और नौजवान ऐसी धोती पहनने लगे जिनकी किनारी पर खुदीराम लिखा होता था। खुदीराम बोस को भारत की स्वतंत्रता के लिए संगठित क्रांतिकारी आंदोलन का प्रथम शहीद माना जाता है। अपनी निर्भीकता और मृत्यु तक को सोत्साह वरण करने के लिए वे घर-घर में श्रद्धापूर्वक याद किए जाते हैं।

साभार : भारतकोष

आवश्यकता

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, शुक्रताल मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) में दो रसाइया, एक वार्डन (संरक्षक), एक क्लर्क, तीन संस्कृत अध्यापक तथा दो आधुनिक विषय के अध्यापकों की आवश्यकता है।वेतन संस्कृत संस्थान के मानदेय अनुसार दिया जाएगा। अधिक जानकारी के लिए नीचे दिए मोबाइल नम्बरों पर सम्पर्क करें :-

स्वामी आनन्दवेश बलदेव 'नैष्ठिक' (प्रबंधक) मो : 9997437990
प्रेमशंकर मिश्रा (प्रधानाचार्य) मो: 9411481624, 9997047680

संस्कृत दिवस

संस्कृत दिवस भारत में प्रतिवर्ष (श्रावणी पूर्णिमा) के दिन मनाया जाता है। **श्रावणी पूर्णिमा** अर्थात् रक्षा बन्धन ऋषियों के स्मरण तथा पूजा और समर्पण का पर्व माना जाता है। ऋषि ही संस्कृत साहित्य के आदि स्रोत हैं, इसलिए श्रावणी पूर्णिमा को ऋषि पर्व और संस्कृत दिवस के रूप में मनाया जाता है। राज्य तथा जिला स्तरों पर संस्कृत दिवस आयोजित किए जाते हैं। इस अवसर पर संस्कृत कवि सम्मेलन, लेखक गोष्ठी, छात्रों की भाषण तथा श्लोकोच्चारण प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया जाता है, जिसके माध्यम से संस्कृत के विद्यार्थियों, कवियों तथा लेखकों को उचित मंच प्राप्त होता है।

सन 1969 में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के आदेश से केन्द्रीय तथा राज्य स्तर पर संस्कृत दिवस मनाने का निर्देश जारी किया गया था। तब से संपूर्ण भारत में संस्कृत दिवस श्रावण पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। इस दिन को इसीलिए चुना गया था कि इसी दिन प्राचीन भारत में शिक्षण सत्र शुरू होता था। इसी दिन वेद पाठ का आरंभ होता था तथा इसी दिन छात्र शास्त्रों के अध्ययन का प्रारंभ किया करते थे। पौष माह की पूर्णिमा से श्रावण माह की पूर्णिमा तक अध्ययन बन्द हो जाता था। प्राचीन काल में फिर से श्रावण पूर्णिमा से पौष पूर्णिमा तक अध्ययन चलता था, इसीलिए इस दिन को संस्कृत दिवस के रूप से मनाया जाता है। आजकल देश में ही नहीं, विदेश में भी संस्कृत उत्सव बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। इसमें केन्द्र तथा राज्य सरकारों का भी योगदान उल्लेखनीय है।

धन्य है भारत देश जहां जन मानस को पवित्र करने वाली व सुरुचिपूर्ण-सुखद भावों को उत्पन्न करने वाले शब्दों के समूह को जन्म देने वाली ऐसी भाषा सुशोभित है, जिसे देववाणी की प्रतिष्ठा प्राप्त है। देश के उपलब्ध समस्त साहित्य में संस्कृत का साहित्य सर्वश्रेष्ठ एवं सुसम्पन्न है। भारत ही नहीं, विदेश में भी इस भाषा की प्रतिष्ठा का मुख्य कारण इसका समृद्ध साहित्य व इसकी कर्णप्रिय ध्वनि है। **'संस्कृत ज्ञान सम्पन्न, सभ्यता-संस्कृति से अनुशासित, मधुर एवं सरल भाषा है।'** पाश्चात्य के सर विलियम जोंस जैसे भाषाविदों ने भी माना है कि **'यह ग्रीक, लैटिन इत्यादि भाषाओं से भी प्राचीन है।'**

देवनागरी लिपि में लिखे जाने वाले इसके वर्तनी - वर्ण - अक्षरों और उनसे बनने वाले शब्दों के उच्चारण में प्राय: कोई आभासी अन्तर न होने के कारण संस्कृत को आज जन-जीवन के सबसे महत्वपूर्ण साधन-संगणक **'कम्प्यूटर'** की महत्वपूर्ण भाषा के रूप में चुना गया है, जिस पर जर्मनी में काफी अनुसंधान-कार्य हो रहा है। ध्यातव्य है कि अत्याधुनिक और विराट मारक क्षमता वाले प्रक्षेपास्त्रों के लिए तो प्रारम्भिक सोच-विचार का आधार ही संस्कृत में विरचित वेद व उनकी संहिताएं हैं।

रवि शास्त्री

संस्कृत भाषा का साहित्य अत्यन्त विशाल और व्यापक है। यह गद्य, पद्य और चम्पू तीनों रूपों में मिलता है, जिसमें तत्कालीन समाज का प्रतिबिम्ब दर्शित है। विश्व का सर्वप्रथम ग्रन्थ- ऋग्वेद इसी भाषा में है। इसके अतिरिक्त यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद भी संस्कृत की महान् रचनाएं हैं। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द ज्योतिष, वेदांग-न्याय, वैशेषिक सांख्य योग, वेदांग मीमांसा, आस्तिक दर्शन, चार्वाक, जैन, बौद्ध, नास्तिक दर्शन सब इसी भाषा में सर्वप्रथम आये।

उपनिषद्, स्मृतियाँ, सूक्त, धर्मशास्त्र, पुराण, महाभारत, रामायण इत्यादि से इसके असीम विस्तार का पता चलता है। सभी साहित्य विषयानुरूप संस्कृत के सरल रूप प्रकट करते हैं। वाल्मीकि, व्यास, भवभूति, दंडी, सुबन्धु, बाण, कालिदास, अश्वघोष, हर्ष, भारवि, माघ और जयदेव आदि कवि, नाटककार व गद्यकार इसके गौरव को सिद्ध करते हैं। पाणिनि जैसे व्याकरणविद् विश्व की अन्य भाषाओं में देखने में नहीं आते हैं। संस्कृत सुनिश्चित व्याकरण वाली भाषा है। यह नियम इसकी रचना में आद्योपान्त चलता है। देश में आज पहले से भी अधिक लोकप्रिय श्रीरामचरित मानस का आधार 'रामायण' व महाभारत के साथ ही समस्त उपनिषद्, अट्ठारह पुराण और अन्य महाकाव्य, नाटक आदि इसी भाषा में लिखे गए हैं।

संस्कृत विश्व की ज्ञात भाषाओं में सबसे पुरानी भाषा है। लैटिन और ग्रीक सहित अन्य भाषाओं की तरह समय के साथ इसकी मृत्यु नहीं हुई। कारण भारत का वैभव तो संस्कृत में ही रचा बसा है। भारत की अन्य भाषाओं हिन्दी, तेलगू, मराठी, सिन्धी, पंजाबी, बंगला, उड़ियाआदि का जन्म संस्कृत की कोंख से ही हुआ है। हिन्दू धर्म के लगभग सभी ग्रंथ संस्कृत में ही लिखे गए हैं। बौद्ध व जैन संप्रदाय के प्राचीन धार्मिक ग्रन्थ संस्कृत में ही हैं। हिन्दुओं, बौद्धों और जैनियों के नाम भी संस्कृत भाषा पर आधारित होते हैं।

अब तो संस्कृत नाम रखने का फैशन भी चल पड़ा है। प्राचीन काल से अब तक भारत में यज्ञ और देव पूजा संस्कृत भाषा

... शेष पृष्ठ 21 पर

गर्भपात : एक गूंगी चीख

अमेरिका में सन 1984 में एक सम्मेलन हुआ था 'नेशनल राइट्स टू लाईफकन्वैन्शन'। इस सम्मेलन के एक प्रतिनिधि ने डॉ. बर्नार्ड नेथेनसन के द्वारा गर्भपात कीबनायी गयी एक अल्ट्रासाउण्ड फिल्म '**साइलेण्ट स्क्रीम**' '**गूँगी चीख**' का जो विवरण दिया था, वह इस प्रकार है :-

''गर्भ की वह मासूम बच्ची अभी 15 सप्ताह की थी और काफी चुस्त थी। हम उसे अपनी माँ की कोख मैं खेलते, करवट बदलते व अंगूठा चूसते हुए देख रहे थे। उसके दिल की धड़कनों को भी हम देख पा रहे थे और वह उस समय 120 की साधारण गति से धड़क रहा था। सब कुछ बिलकुल सामान्य था, किन्तु जैसे ही पहले औजार (सक्सन पम्प) ने गर्भाशय की दीवार को छुआ, वह मासूम बच्ची डर से एकदम घूमकर सिकुड़ गयी और उसके दिल की धड़कन काफी बढ़ गयी। हालांकि अभी तक किसी औजार ने बच्ची को छुआ तक भी नहीं था, लेकिन उसे अनुभव हो गया था कि कोई चीज उसके आरामगाह, उसके सुरक्षित क्षेत्र पर हमला करने का प्रयत्न कररही है। हम दहशत से भरे यह देख रहे थे कि किस तरह वह औजार उस नन्हीं-मुन्नी मासूम गुड़िया-सी बच्ची के टुकड़े-टुकड़े कर रहा था।

पहले कमर, फिर पैर आदि के टुकड़े ऐसे काटे जा रहे थे जैसे वह जीवित प्राणी न होकर कोई गाजर-मूली हो और वह बच्ची दर्द से छटपटाती हुई, सिकुड़कर घूम-घूमकर तड़पती हुई इस हत्यारे औजार से बचने का प्रयत्न कर रही थी। वह इतनी बुरी तरह डर गयी थी कि एक समय उसके दिल की धड़कन 200 तक पहुँच गयी! मैंने स्वंय अपनी आँखों से उसको अपना सिर पीछे झटकते व मुँह खोलकर चीखने का प्रयत्न करते हुए देखा, जिसे डॉ. नेथेनसन ने उचित ही 'गूँगी चीख' या 'मूक पुकार' कहा है। अंत में हमने वह नृशंस वीभत्स दृश्य भी देखा, जब सँडसी उसकी खोपड़ी को तोड़ने के लिए तलाश रही थी और फिर दबाकर उस कठोर खोपड़ी को तोड़ रही थी क्योंकि सिर का वह भाग बगैर तोड़े सक्शन ट्यूब के माध्यम से बाहर नहीं निकाला जा सकता था। हत्या के इस वीभत्स खेल को सम्पन्न करने में करीब पन्द्रह मिनट का समय लगा और इसके दर्दनाक दृश्य का अनुमान इससे अधिक और कैसे लगाया जा सकता है कि जिस डॉक्टर ने यह गर्भपात किया था और जिसने मात्र कौतूहलवश इसकी फिल्म बनवा ली थी, उसने जब स्वयं इस फिल्म को देखा तो वह अपना क्लीनिक छोड़कर चला गया और फिर वापस नहीं आया।''

गर्भपात करना और करवाना दोनों ही गलत हैं, मगर फिर भी हमारे समाज में यह कुकृत्य आए दिन होता है। इसमें जितना दोष पुरुष वर्ग का है उससे कहीं अधिक दोष नारी का है और सबसे बड़ा अपराधी इस अपराध में वो डॉक्टर है जो चन्द रुपयों के लालच में अपने पेशे से खिलवाड़ करता है।

डॉक्टर को भगवान का दूसरा रूप कहा जाता है मगर वर्तमान समय में यह पेशा कुछ लोभी प्रवृत्ति के लोगों की वजह से बदनाम हो रहा है। इस ओर डॉक्टर और नारी वर्ग को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

साभार: **जसविन्द्र आर्य,**
भजनोपदेशक गुरुकुल कुरुक्षेत्र

संस्कृत दिवस... पृष्ठ 20 का शेष

में ही होते हैं। यही कारण रहा कि तमाम षड्यंत्रों के बाद भी संस्कृत को भारत से दूर नहीं किया जा सका। यह दैनिक जीवन में नित्य उपयोग होती रही, भले ही कुछ समय के लिए पूजा-पाठ तक सिमटकर रह गई थी। लेकिन, समय के साथ अब फिर इसकी स्वीकार्यता बढ़ रही है। आज भी पूरे भारत में संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन से भारतीय एकता को सुदृढ़ किया जा सकता है। सार्थक प्रयासों से संस्कृत को फिर से जन-जन की भाषा बनाया जा सकता है।

व्यवसायीकरण के बाद से भारत में जहां अंग्रेजी का वर्चस्व बढ़ रहा है, वहीं विदेश में संस्कृत का झंडा बुलंद हो रहा है। देश-विदेश में समय-समय पर हुए तमाम शोधों ने भी स्पष्ट किया कि संस्कृत विज्ञान सम्मत भाषा है। शोध के बाद सिद्ध हुआ है कि कम्प्यूटर के लिए सबसे उपयुक्त भाषा भी संस्कृत ही है। विश्व की प्रतिष्ठित वैज्ञानिक संस्था नासा भी लंबे समय से संस्कृत को लेकर रिसर्च कर रही है। दुनिया के कई देशों में संस्कृत का अध्ययन कराया जा रहा है। इसके अलावा कई विदेशी संस्कृत सीखने के लिए भारत का रुख कर रहे हैं। इन्हीं में से एक हैं पोलैंड की अन्ना रुचीस्की, जिनका पूरा परिवार ही अब संस्कृतमय हो गया है। इनके परिवार में आपस में बातचीत भी संस्कृत में की जाती है।

संस्कृत में रुचीस्की की रुचि 20 साल पहले जगी थी। अन्ना रुचीस्की अपने पति तामष रुचीस्की के साथ घूमने के लिए भारत आई थीं। वे बनारस के घाट पहुंचीं। यहां गूंज रहे वेदमंत्रों से प्रभावित होकर वे '**काशी हिन्दू विश्वविद्यालय**' और '**संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय**' पहुंचीं। विश्वविद्यालय में रुचीस्की ने संस्कृत भाषा और भारत की संस्कृति को पहली बार करीब से जाना। अंतत: देवभाषा से प्रेरित होकर अन्ना ने संस्कृत विश्वविद्यालय से डॉ पुरुषोत्तम प्रसाद पाठक के निर्देशन में वर्ष 2006 में पी.एचडी. किया।

- रवि शास्त्री
संस्कृत शिक्षक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

विचार विवरण - 55

बात हक की हो तो क्यूँ चंद मकाँ तक पहुँचे।
इस कदर फैले कि सारे जहाँ तक पहुँचे।।

सुकन्या समृद्धि खाता योजना

0 से 10 वर्ष की बच्चियों के सुखद एवं मजबूत भविष्य की आधारशिला

सही सोच-सही सुझाव

आज जब उसकी बेटी ने स्कूल से आकर कहा - 'मम्मी मैं आज बहुत खुश हूँ मेरा मन है मैं खुलकर हँसू और हँसती रही रहूँ।' तो उसको अपने बचपन के वो दिन याद आए जब उसकी माँ उसके हँसने पर अक्सर कहा करती थी बेटा इतना ज्यादा मत हँसो बाद में रोना पड़ेगा वही बात वह उसे कहने ही वाली थी पर यह सोच कर रुक गई कि कल की कल देखेंगे इसे आज तो खुश रहने दूँ। मेरा विश्वास है कि इस कहानी को पढ़कर आपके विचार में एक बात अवश्य आयी होगी कि माँ की सोच बिल्कुल सही है इस सोच की सराहना करते हुए और इस आश्वासन के साथ कि आज ही नहीं बेटी भविष्य में भी खुश रहेगी बशर्ते कि वह अपनी आर्थिक स्थिति अनुसार अपनी बेटी के नाम नजदीकी डाकघर में एक सुकन्या समृद्धि खाता खुलवा दें।

इस लघु लेख का मकसद : इसी योजना की जानकारी सभी अभिभावकों तक पहुँचाना है प्रसन्नता की बात है कि इस योजना की उपयोगिता को देखते हुए हरियाणा के लगभग 4 लाख अभिभावकों ने अपनी बेटियों के नाम यह खाते खुलवा लिए हैं अब चूँकि प्रदेश में पात्र बच्चियों की गिनती लगभग 22 लाख है - स्पष्ट है कि अधिकतर अभिभावकों को इसकी जानकारी नहीं है - हो सकता है आपको भी न हो।

इस योजना की कुछ विशेष बातें : आप अपनी बेटी के नाम यह खाता 1000 रुपये से अपने नजदीकी डाकघर में खुलवा सकते हैं। इसमें आपक कम से कम 1000 रुपये सालाना और अधिक से अधिक 1,50,000 रुपये तक जमा करवा सकते हैं। खाला खुलने की तारीख से 21 वर्ष तक या बेटी की शादी पर (जो भी पहले हो) उसी समय खाता परिपक्व माना जाएगा। खाते में राशि आपको केवल 15 वर्ष ही जमा करवानी है। जब बेटी 18 वर्ष की हो जाए या दसवीं कक्षा उत्तीर्ण कर लें, तब उच्च शिक्षा के लिए कुल राशि का 50 प्रतिशत तक निकासी कर सकती हैं। केवल दो बेटियों का खाता खुल सकता है, यदि दो बेटियाँ जुड़वाँ है तो तीन बेटियों का खाता खुल सकता है।

नोट : अपनी बेटी के इस खाते में आप द्वारा जमा की गई राशि पर आपको इन्कम टैक्स एक्ट 1961 की धारा 80 -सी के तहत आयकर में पूर्ण छूट मिलेगी और बेटी को मिलने वाली परिपक्वता राशि पूर्णतया कर मुक्त होगी। मौजूदा ब्याज दर 8.1 प्रतिशत है और सरकार द्वारा प्रति तिमाही ब्याज की समीक्षा की जाती है।

खाता खुलने के 21 वर्ष बाद वर्तमान ब्याज दर से बेटी को देय राशि (कुछ उदाहरण)

क्र0	खाते में जमा की गई राशि	15 वर्ष में जमा कुल राशि (रु.)	बेटी को मिलने वाली राशि (रु.)
1.	1,000 रु. प्रति माह	1,80,000 रुपये	5,46,977 रुपये
2.	2,500 रु. प्रति माह	4,50,000 रुपये	13,67,443 रुपये
3.	5,000 रु. प्रति माह	9,00,000 रुपये	27,34,887 रुपये
4.	1,000 रु. प्रति माह	15,000 रुपये	47,203 रुपये
5.	1,00,000 रु. प्रति माह	15,00,000 रुपये	47,20,253 रुपये
6.	1,50,000 रु प्रति माह	22,50,000 रुपये	70,80,379 रुपये

इसके लिए जरूरी दस्तावेज :

बेटी के जन्म प्रमाण पत्र की कापी, माता-पिता / संरक्षक, किसी एक की दो फोटो एवं पहचान या आवासीय प्रमाण-पत्र।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा 22.01.2015 को पानीपत से बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान के साथ उसी मंच से शुरु की गई इस योजना का एकमात्र उद्देश्य है बच्चियों की आर्थिक व सामाजिक भलाई अपनी बेटी के प्रति यह आपकी नैतिक जिम्मेदारी तो है ही साथ ही यह बेटी का अधिकार भी है इसीलिए मेरी आपसे पुरजोर अपील है कि आज ही नजदीकी डाकघर में बेटी के नाम यह खाता अवश्य खुलवाएं । कोई असुविधा होने पर आप **श्री वेद प्रकाश**, अधीक्षक डाकघर, कुरुक्षेत्र **(मो : 9466428054)** अथवा **श्री विकास रत्हन**, सहायक अधीक्षक, परिमण्डल कार्यालय, अंबाला **(मो : 9416967191)** पर सम्पर्क कर सकते हैं।

'डाकघर सदैव आपकी सेवा में'

यही है इबादत यही दीन - ओ - ईमाँ।
कि काम आए दुनिया में इंसाँ के इंसाँ।।

निवेदक : कर्नल सुखदेव राज, चीफ पोस्टमास्टर जनरल, हरियाणा।

स्वस्थ रहने के लिए लें शुद्ध आहार

वर्तमान समय में मनुष्य दावा करता है कि वह प्राकृतिक रूप से अपना जीवन यापन करता है लेकिन क्या हम वास्तव में अपने स्वास्थ्य को अच्छा बनाए रखने के लिए प्राकृतिक रूप से रहते हैं। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खुली हवा में मनोरंजन करना तथा घर का भोजन लाभकारी होता हैं ऐसा करने से हमें प्रकृति का लाभ तथा संतुलित भोजन दोनों ही प्राप्त हो जाते हैं लेकिन क्या हम लोग इसका उल्टा नहीं करते है। वर्तमान समय में कुछ लोग खुले स्थानों पर घूमने की बजाए घर के अन्दर बैठे हुए टी.वी. से चिपके रहते हैं। असंतुलित आहार के कारण ही हम शारीरिक और मानसिक रोगों से ग्रस्त होते हैं। हम अपने शरीर से शारीरिक और मानसिक रूप से अधिक मेहनत लेते हैं जबकि अपने शरीर को उचित पौषक तत्त्व नहीं देते हैं।

हमारे भोजन में अधिक विभिन्नता शरीर के लिए हानिकारक; अधिक धन, वैभव और विभिन्न प्रकार के भोजन से हमारा शरीर विभिन्न रोगों से ग्रस्त होता है तथा हमारे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है। हमारे वर्तमान समय की जीवनशैली में विभिन्न प्रकार का भोजन लोकप्रिय है। विभिन्न प्रकार के भोज्य पदार्थों को एक साथ लेने से वह शरीर के अंदर रासायनिक प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं जिसका हमारे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है किन्तु यह प्रभाव तब तक दिखाई नहीं पड़ता है जब तक हमारे शरीर में विद्यमान प्राणशक्ति, उनको ग्रहण न करने के कारण निम्न स्तर तक नहीं पहुंच जाती है लेकिन धीरे-धीरे हमारे शरीर में विषैले तत्त्व एकत्रित होकर गम्भीर बीमारी का रूप ले लेते हैं।

प्रकृति ने हमारे शरीर का निर्माण इस प्रकार से किया है कि हम बिना भोजन के तथा अन्य विषम परिस्थितियों में भी जीवित रह सकते हैं। जब हम आहार का सेवन करते हैं तो प्राप्त पोषण का एक हिस्सा शरीर में संचित हो जाता है जो भोजन न करने या अन्य परिस्थितियों के उत्पन्न होने पर शरीर के काम आता है। यह अवसर हमारे शरीर को तभी प्राप्त होता है जब हम किसी कारण भोजन ग्रहण नहीं करते है। शरीर में एकत्रित इस पोषण का हम उपयोग नहीं करते हैं तो इसके कारण हमारे शरीर के लिए खतरा उत्पन्न हो जाता है।

प्राकृतिक एवं कृत्रिम भोजन : हरी सब्जियां, फल, पत्तियां, गिरी, अनाज, दूध, दूध से बने पदार्थ आदि प्राकृतिक भोजन आसानी से पच जाते हैं। प्राकृतिक भोजन हमारे शरीर में आसानी से पच जाते है। पाचन-तंत्र को प्राकृतिक भोजन को पचाने में अधिक मेहनत नहीं करनी पड़ती है। प्राकृतिक भोजन की गुणवत्ता उच्च होती है। यह भोजन हमारे शरीर को शक्ति तथा मस्तिष्क को चुस्ती और शांति प्रदान करता है। जब प्राकृतिक भोजन को पकाया जाता है तो सिर्फ उसका रूप परिवर्तित हो जाता है, लेकिन जब उसे फ्रिज में रखा जाता है, अचार डाला जाता है, तला जाता है, उसको लम्बे समय तक सुरक्षित रखने के लिए रासायनिक पदार्थों का सेवन किया जाता है तब उसमें बनावटी तत्त्व उपस्थित हो जाते हैं। वैसे इन प्रक्रियाओं से भोजन स्वादिष्ट हो जाता है। भोजन को पकाने से इसमें पाये जाने वाले पोषक तत्व और एन्जाइम नष्ट हो जाते हैं। जब हम भोजन को उबालते है अथवा भाप में पकाते है अथवा घी के साथ बघारते हैं तो इस प्रकार पकाने से भोजन के आवश्यक तत्त्व नष्ट नहीं होते हैं। यदि हम भोजन को अधिक पकाते हैं अथवा तलते-भूनते हैं तो भोजन के पोषक तत्त्व नष्ट हो जाते हैं।

हम जो भोजन ग्रहण करते हैं उसका हमारे स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव पड़ता है। वर्तमान समय में फलों और सब्जियों के उत्पादन में कीटनाशक दवाइयों के अधिक उपयोग के कारण कच्चा और प्राकृतिक भोजन करने की सलाह नहीं दी जा सकती है। लेकिन जहाँ तक हो सके कच्ची सब्जियों को खाने की आदत डालनी चाहिए। कच्ची सब्जियों को खाने से पहले अच्छी तरह से धो लेना चाहिए। लोगों को अभी भी यह मालूम नहीं है कि प्राकृतिक भोजन हमारे स्वास्थ्य के लिए कितना अधिक लाभकारी है। वर्तमान समय में व्यक्तियों को बनावटी भोजन ही अच्छा लगता है।

रिफाइंड चीनी हमारे स्वास्थ्य के लिए सबसे अधिक हानिकारक होती है। इससे हमारा शरीर शारीरिक और मानसिक रोगों से ग्रस्त हो जाता है। रिफाइंड चीनी के उपयोग से विभिन्न प्रकार के हानिकारक प्रभाव होते हैं जैसे खतरनाक बीमारियां, बदला हुआ मानसिक व्यवहार, किशोरों में जिद्द तथा स्वयं को महत्त्वपूर्ण होने का दिखावा, अपराधियों में हिंसा। इन सभी का कारण रिफाइंड चीनी का आवश्यकता से अधिक उपयोग होना है। रिफाइंड चीनी का प्रयोग बाजार में मिलने वाले डिब्बाबंद व्यवसायिक आहारों, जैम, जैली, अचार और ठंडे पेय पदार्थों में अधिक मात्रा में होता है।

रिफाइंड चीनी में बहुत अधिक मात्रा में एल्कालाइड पाया जाता है। अधिकांश एल्कालाइड, कुनीन, मार्फिन, एट्रोपीन तथा कोडीन आदि शक्तिशाली दवाइयां होती है। इनकी तेजाब बनाने की प्रवृत्ति के कारण यह पाचन-शक्ति को नष्ट करके पेट में अस्थायी तौर पर पक्षाघात कर देती हैं । इस चीनी के दुष्प्रभावों को नष्ट करने में हमारे शरीर में पाये जाने वाले खनिज तत्त्व नष्ट हो जाते हैं। खनिज तत्त्वों की कमी होने से हमारे दांत गिर जाते है, हड्डियां कमजोर हो जाती हैं जिससे आमाशय की दीवारों में घाव उत्पन्न हो जाते हैं। रिफाइंड चीनी का अधिक सेवन करने से हमारी स्मरण शक्ति कमजोर होती है, सिर भारी रहता है इसलिए इसका प्रयोग बिल्कुल न करें।

संकलन : डॉ. सत्येन्द्र तिवारी
पंचकर्म एवं प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ

गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में शैक्षणिक स्तर पर दो प्रकल्प चलते हैं। सी. बी.एस.ई. पाठ्यक्रम के अनुसार 10+2 तक का विद्यालय है जो **ISO 9001: 2008** प्रमाणित संस्थान है। इस पाठ्यक्रम के अनुसार यहाँ लगभग 1500 विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। दूसरा **आर्ष महाविद्यालय** है जिसमें वैदिक व्याकरण व वैदिक साहित्य का अध्ययन कराया जाता है। इन शिक्षण प्रकल्पों के अतिरिक्त शिक्षा, समाज सेवा व सामाजिक चेतना को ध्यान में रखते हुए जो विविध गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं, इनकी संक्षिप्त झलक निम्न प्रकार है -

प्रशासनिक विभाग : आधुनिक तीन मंजिला प्रशासनिक भवन में अतिथियों के लिए 250 कुर्सियाँ एवं सुविधायुक्त वातानुकूलित सभागार व कार्यालय हैं।

आर्ष महाविद्यालय : वैदिक धर्म एवं वेदों के प्रचार हेतु आर्ष पाठ विधि से व्याकरण एवं वेद के विद्वान् तैयार किये जा रहे हैं।

वातानुकूलित संगणक प्रयोगशालाएँ : गुरुकुल में वातानुकूलित कम्प्यूटरीकृत शिक्षा-व्यवस्था है। यहाँ 75 कम्प्यूटर हैं जिन पर छोटे-बड़े छात्रों हेतु अलग-अलग व्यवस्था है। इनमें प्रोजेक्टर और वाई-फाई की सुविधा भी है।

वातानुकूलित भाषा व विज्ञान प्रयोगशालाएँ : शिक्षा को व्यावहारिक रूप देने व छात्रों के पूर्ण विकास हेतु बहुतकनीकी यन्त्रों से युक्त व दृश्य-श्रव्य यंत्रों से सुसज्जित प्रयोगशालाएँ हैं।

वातानुकूलित पुस्तकालय व वाचनालय : छात्रों के विकास हेतु वेद, उपनिषद्, वेदांग एवं स्वतन्त्रता सेनानियों का इतिहास व महापुरुषों की जीवनियाँ तथा विज्ञान, दर्शन सम्बन्धी हजारों पुस्तकें व सी.डी. आदि हैं। 21 दैनिक समाचार पत्र एवं 75 साप्ताहिक व मासिक पत्रिकाएँ आती हैं।

अत्याधुनिक गोशाला : छात्रों को शुद्ध एवं पौष्टिक दुग्ध उपलब्ध कराने के लिए गुरुकुल में अत्याधुनिक गोशाला है। जहां पर विभिन्न देशी व विदेशी नस्ल की लगभग 282 गायें हैं जो प्रतिदिन 1150 लीटर दूध देती हैं।

अश्वारोहण (घुड़सवारी): इसके लिए उत्तम नस्ल के 8 घोड़ियाँ व 1 घोड़ा है। कुशल प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है।

क्लीनिकल लेबोरेट्री : पशुओं की विभिन्न बीमारियों से संबंधित टेस्ट हेतु लैब है जहां पर अनुभवी डॉक्टर द्वारा पेशाब, खून व दूध आदि की प्रामाणिक जाँच की जाती है।

शूटिंग (निशानेबाजी प्रशिक्षण): इसके माध्यम से गुरुकुल ने अभी तक 10 अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी राष्ट्र को दिये हैं।

एन.सी.सी (छोटे-बड़े छात्रों हेतु): गुरुकुल एन.सी.सी. के छात्र गणतन्त्र व स्वतंत्रता दिवस की परेड में भाग ले चुके हैं तथा एन.सी.सी. के कैम्पों में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

नेशनल डिफेंस एकेडमी (एन.डी.ए.): सेवानिवृत्त सेना अधिकारी के मार्गदर्शन में एन.डी.ए. परीक्षा की तैयारी के लिए दो एकड़ भूमि पर ऑब्स्टेकल कोर्स का निर्माण किया गया है।

एन.एस.एस विंग : राष्ट्रीय एकता व सामाजिक सद्भाव हेतु एन.एस.एस. द्वारा सामाजिक चेतना जागृत की जाती है।

विशाल भोजनालय : छात्रों, गुरुकुल से जुड़े सभी कर्मचारियों एवं अतिथियों हेतु विशाल भोजनालय की व्यवस्था है।

संगीतमय फव्वारे : गर्मियों की उमस से बचने एवं मनोरंजनपूर्ण स्नान के लिए आकर्षक संगीतमय फव्वारें गुरुकुल में है।

पं. अमीचन्द संगीत केन्द्र : छात्रों को मनोरंजन एवं संगीत शिक्षण हेतु भक्त अमीचन्द संगीत केन्द्र में संगीत की शिक्षा-व्यवस्था है।

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय : गुरुकुल में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय है जो गम्भीर रोगों के उपचार के साथ चिकित्सा सम्बन्धी **'डिप्लोमा इन योग एंड साइंस'** कोर्स भी कराया जाता है।

धन्वन्तरि चिकित्सालय : छात्रों के शारीरिक स्वास्थ्य एवं खेलकूद में आने वाली हल्की चोट-मोच आदि के लिए आयुर्वेदिक चिकित्सालय में कुशल वैद्यों की व्यवस्था है।

वेद प्रचार विभाग : भारतीय संस्कृति एवं वेदों के प्रचार हेतु गुरुकुल में वेद प्रचार विभाग का गठन किया गया। जिसके तहत लगभग डेढ़ दर्जन प्रचारक दिन-रात विभिन्न क्षेत्रों में घूम-घूम कर लोगों को वेदवाणी और आर्य सिद्धान्तों के प्रति जागरूक कर रहे हैं। वहीं योग शिक्षकों के माध्यम से विद्यालय व कॉलेजों में योग एवं चरित्र निर्माण अभियान चलाया जा रहा है।

प्राकृतिक उत्पाद बिक्री केन्द्र : लोगों को जहरमुक्त एवं रसायनमुक्त फल, सब्जियाँ व अन्न उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा **'प्राकृतिक उत्पाद बिक्री केन्द्र'** खोला गया है जहाँ पर गुरुकुल के फार्म पर उत्पादित सभी वस्तुएँ उचित मूल्य पर उपलब्ध हैं।

इनके अतिरिक्त **जीरो बजट प्राकृतिक कृषि फार्म, स्वामी श्रद्धानन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी, आकर्षक पौधशाला (नर्सरी)** भी है। आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र, जिसमें आर्य भजनोपदेशक तैयार किये जाते हैं। वहीं **'गुरुकुल-दर्शन'** मासिक पत्र के माध्यम से वैदिक धर्म एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

।। ओ३म् ।।

ORG / SC / 1712 / 002449A Certified

USOCA
NPOP/NAB/0011

आपके शहर में खुल गया है

गुरुकुल कुरुक्षेत्र

के शून्य लागत प्राकृतिक कृषि फार्म के

प्राकृतिक (ऑर्गेनिक) उत्पाद बिक्री केन्द्र

100% रसायन एवं जहरमुक्त

फ्रीज़र में ठंडा किया हुआ प्राकृतिक गन्ने का जूस, हरी सब्जियाँ, गेहूँ, शहद, चावल, गुड़, शक्कर, गेहूँ व जौं का दलिया इत्यादि उचित मूल्य पर मिलते हैं।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के सामने, ढाण्ड रोड, कुरुक्षेत्र

सम्पर्क सूत्र : 99960-26313

हिमाचल प्रदेश के नवनियुक्त डीजीपी श्री सीताराम मार्डी विशेष तौर पर गुरुकुल कुरुक्षेत्र का अवलोकन करने पहुँचे। गुरुकुल में पहुँचने पर प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, निदेशक व प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता व सह-प्राचार्य शमशेर सिंह ने पुष्प-गुच्छ देकर उनका स्वागत किया । डीजीपी महोदय ने गुरुकुल की गोशाला, एनडीए विंग, शूटिंग रेंज, अश्वशाला, जीरो बजट प्राकृतिक कृषि फार्म सहित सभी प्रकल्पों का निरीक्षण किया और गुरुकुल प्रबंधन की खूब सराहना की। डीजीपी महोदय ने गुरुकुल के 'प्राकृतिक उत्पाद बिक्री केंद्र' से ।फल व सब्जियाँ भी खरीदी और राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी की प्रशंसा की।

गुरुकुल से सेवानिवृत्त हुए हिन्दी के शिक्षक डॉ. श्याम लाल शर्मा को उपहार भेंट कर विदाई देते हुए गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, निदेशक व प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता एवं सह-प्राचार्य शमशेर सिंह, शिक्षक प्रेमपाल वशिष्ठ तथा गुरुकुल के छात्र जयघोष करते हुए ।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में छात्र एवं गुरुकुल के हित को लेकर हुई एक महत्त्वपूर्ण बैठक में विचार-विमर्श करते हुए गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी के ओ.एस.डी. डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार एवं सह-प्राचार्य शमशेर सिंह

RNI Reg.No. : HARBIL / 2015 / 64244

Postel Regn. No. HR/KKR/181/2018-2020

स्वामी- गुरुकुल कुरुक्षेत्र, कुरुक्षेत्र के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक श्री कुलवंत सिंह सैनी द्वारा क्रेजी ऑफसेट प्रिंटिंग प्रैस, सलारपुर रोड, निकट डी.एन. कालेज, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) से मुद्रित एवं गुरुकुल कुरुक्षेत्र, (निकट थर्ड गेट कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी), कुरुक्षेत्र से प्रकाशित। सम्पादक -कुलवंत सिंह सैनी

मूल्य-15रु एक प्रति (150रु वार्षिक)

प्रतिष्ठा में

_____

_____

_____